CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2018 with Solution PDF-Set 2/2 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 6, 11 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लगभग 20 शब्दों में लिखिए ।

शांति नहीं तब तक, जब तक,
सुख भाग न सबका सम हो ।
नहीं किसी का बहुत अधिक हो,
नहीं किसी का कम हो ।
स्वत्व माँगने से न मिले,
संघात पाप हो जाएँ ।
बोलो धर्मराज, शोषित वे
जियें या कि मिट जाएँ ?
न्यायोचित अधिकार माँगने
से न मिले, तो लड़ के
तेजस्वी छीनते समर को
जीत या कि खुद मर के
किसने कहा पाप है समुचित
स्वत्व प्राप्ति-हित लड़ना ?
उठा न्याय का खड्ग समर में
अभय मारना मरना ? [5 अंक]

1(क). काव्यखण्ड का संदेश अपने शब्दों में लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए पाठ के शब्द और उनका संदर्भ है; उसी से मुख्य भाव पहचानना चाहिए।
- काव्यांश का संदेश को स्पष्ट करते समय पाठ में कही गई बात और उसके आशय का संबंध बनाए रखना चाहिए।

चरण 1: पाठ से आधार पहचानें कवि पहले सुख के समान वितरण को शांति की शर्त बताता है। किसी के पास बहुत अधिक और किसी के पास बहुत कम होना सामाजिक विषमता का संकेत है।

चरण 2: आशय स्पष्ट करें अंतिम पंक्तियाँ उचित अधिकार प्राप्त करने के लिए निर्भय संघर्ष का समर्थन करती हैं। अत: संदेश में समानता के साथ अन्याय का प्रतिरोध भी शामिल होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष समानता और न्याय के बिना स्थायी शांति संभव नहीं है। अपने उचित अधिकारों के लिए संघर्ष करना पाप नहीं है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का मुख्य शब्द पहचानें, फिर उसी से संबंधित पंक्ति चुनकर संक्षिप्त उत्तर लिखें; इस प्रश्न में काव्यांश का संदेश पर केंद्रित रहें।

1(ख). तेजस्वी लोगों की क्या पहचान है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए पाठ के शब्द और उनका संदर्भ है; उसी से मुख्य भाव पहचानना चाहिए।
- तेजस्विता का अर्थ को स्पष्ट करते समय पाठ में कही गई बात और उसके आशय का संबंध बनाए रखना चाहिए।

चरण 1: पाठ से आधार पहचानें काव्यांश में तेजस्वी व्यक्तियों की पहचान उनके न्यायोचित अधिकारों के प्रति दृढ़ निश्चय से होती है। वे

अधिकार माँगते हैं, लेकिन माँग अस्वीकार होने पर निष्क्रिय नहीं रहते।

चरण 2: आशय स्पष्ट करें वे अपने उचित स्वत्व के लिए संघर्ष करते हैं। जीतने अथवा स्वयं मर जाने का उल्लेख उनके साहस और बलिदान की तैयारी को प्रकट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष तेजस्वी लोग माँगने पर अधिकार न मिलने से निर्भय संघर्ष करते हैं और विजय अथवा मृत्यु तक पीछे नहीं हटते।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का मुख्य शब्द पहचानें, फिर उसी से संबंधित पंक्ति चुनकर संक्षिप्त उत्तर लिखें; इस प्रश्न में तेजस्विता का अर्थ पर केंद्रित रहें।

1(ग). धर्मराज से क्या पूछा गया है ?

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए पाठ के शब्द और उनका संदर्भ है; उसी से मुख्य भाव पहचानना चाहिए।
- धर्मराज से किया प्रश्न को स्पष्ट करते समय पाठ में कही गई बात और उसके आशय का संबंध बनाए रखना चाहिए।

चरण 1: पाठ से आधार पहचानें कवि शोषितों की स्थिति सामने रखता है। उनका स्वत्व माँगने पर भी नहीं मिलता और संघर्ष को पाप कहा जाता है। ऐसी परिस्थिति में उनके अस्तित्व का संकट खड़ा होता है।

चरण 2: आशय स्पष्ट करें प्रश्न का केंद्र यही विरोधाभास है कि अधिकारविहीन शोषितों को जीने का उपाय कैसे मिले। उत्तर में धर्मराज से पूछा गया मूल प्रश्न ही स्पष्ट करना है।

चरण 3: निष्कर्ष धर्मराज से पूछा गया है कि उचित अधिकार माँगने पर भी न पाने वाले शोषित लोग जिएँ या मिट जाएँ।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का मुख्य शब्द पहचानें, फिर उसी से संबंधित पंक्ति चुनकर संक्षिप्त उत्तर लिखें; इस प्रश्न में धर्मराज से किया प्रश्न पर केंद्रित रहें।

1(घ). कौन सा युद्ध निष्पाप माना गया है ?

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए पाठ के शब्द और उनका संदर्भ है; उसी से मुख्य भाव पहचानना चाहिए।
- न्यायपूर्ण संघर्ष को स्पष्ट करते समय पाठ में कही गई बात और उसके आशय का संबंध बनाए रखना चाहिए।

चरण 1: पाठ से आधार पहचानें कवि समुचित स्वत्व की प्राप्ति के उद्देश्य से किए गए संघर्ष की चर्चा करता है। यहाँ युद्ध का उद्देश्य दूसरों के अधिकार छीनना अथवा केवल प्रभुत्व स्थापित करना नहीं है।

चरण 2: आशय स्पष्ट करें माँगने पर उचित अधिकार न मिलने से न्याय के लिए संघर्ष आवश्यक हो सकता है। इसलिए न्याय का खड्ग उठाना तथा निर्भय संघर्ष करना पाप नहीं माना गया है।

चरण 3: निष्कर्ष अपने न्यायोचित अधिकार और उचित स्वत्व की प्राप्ति के लिए अन्याय के विरुद्ध निर्भय होकर लड़ा गया युद्ध निष्पाप है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का मुख्य शब्द पहचानें, फिर उसी से संबंधित पंक्ति चुनकर संक्षिप्त उत्तर लिखें; इस प्रश्न में न्यायपूर्ण संघर्ष पर केंद्रित रहें।

1(ङ). शांति के लिए क्या आवश्यक है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए पाठ के शब्द और उनका संदर्भ है; उसी से मुख्य भाव पहचानना चाहिए।
- शांति की आवश्यक शर्त को स्पष्ट करते समय पाठ में कही गई बात और उसके आशय का संबंध बनाए रखना चाहिए।

चरण 1: पाठ से आधार पहचानें आरंभिक पंक्तियाँ सीधे कहती हैं कि सबका सुख-भाग समान होने तक शांति नहीं हो सकती। कवि शांति को समाज की आर्थिक और सामाजिक समानता से जोड़ता है।

चरण 2: आशय स्पष्ट करें अगली पंक्तियाँ इसी बात को स्पष्ट करती हैं कि किसी का भाग बहुत अधिक और किसी का बहुत कम नहीं होना चाहिए। इस विषमता का मिटना शांति की आवश्यक शर्त है।

चरण 3: निष्कर्ष स्थायी शांति के लिए सुख का समान वितरण आवश्यक है; किसी के पास बहुत अधिक और किसी के पास कम न हो।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का मुख्य शब्द पहचानें, फिर उसी से संबंधित पंक्ति चुनकर संक्षिप्त उत्तर लिखें; इस प्रश्न में शांति की आवश्यक शर्त पर केंद्रित रहें।

---

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 20 – 30 शब्दों में दीजिए :

अब प्रश्न यह है कि हम सरल कैसे बनें । सीधा सा उत्तर है, सरल रहें । जो मन में है उसे कह डालें लेकिन पूरी शालीनता से । कम-से-कम एक मुसकराहट बिखेर दें, स्वयं को स्वीकारें और दूसरों को भी । सरलता आती जाएगी । जो व्यक्ति पल-पल घटती घटनाओं को दर्शक की तरह देखता रहता है, चीज़ों को पकड़कर नहीं बैठता, बोलने की क्षमता होने पर भी एक भी शब्द व्यर्थ नहीं बोलता वही मितभाषी है । मितभाषी इस रहस्य को जानता है कि मौन ही सर्वोत्तम भाषण है । कम-से-कम बोलना, एक शब्द से काम चले तो दो का प्रयोग न करना मितभाषी के लक्षण हैं, जो मौन की साधना का प्रथम चरण है । कम बोलने का अभ्यास धीरे-धीरे करना पड़ता है । केवल आवश्यकता पड़ने पर ही सारयुक्त शब्दों का प्रयोग करने से हम बहुत-सी शक्ति के अपव्यय से बच सकते हैं ।

विचार ही वाणी और सारी क्रियाओं का मूल होता है । इसलिए वाणी और क्रिया भी विचार का ही अनुसरण करती हैं । नियंत्रित विचार खुद ही सर्वोच्च प्रकार की शक्ति है । मनुष्य जाने-अनजाने अतिशयोक्ति करता है, या जो बातें कहने योग्य हैं उन्हें छिपाता है, या उन्हें दूसरे ढंग से कहता है । ऐसी स्थिति से बचने के लिए मितभाषी होना जरूरी है । कम बोलने वाला आदमी बिना विचारे नहीं बोलेगा, वह अपने हर शब्द को तौलकर ही प्रयोग करेगा ।

जब आप मौन का नियमित अभ्यास करते हैं, तो वह आपकी शारीरिक और आध्यात्मिक आवश्यकता बन जाता है । प्रारंभ में काम के दबाव से राहत पाने में भी मौन से मदद मिलती है । धीरे-धीरे आपको मौन के समय अपने भीतर शक्ति और क्षमता का अनुभव होने लगता है । गीता में स्पष्ट कहा गया है कि ऐसी वाणी जो उत्तेजित न करे, सच्ची, प्रिय और हितकारी हो उसे वाणी की तपस्या कहते हैं और यह तपस्या करना दुष्कर तो है किंतु असंभव नहीं है । [15 अंक]

2(क). "मनुष्य जाने-अनजाने अतिशयोक्ति करता है" – कैसे ? इससे कैसे बचा जा सकता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए पाठ के शब्द और उनका संदर्भ है; उसी से मुख्य भाव पहचानना चाहिए।
- अतिशयोक्ति और मितभाषिता को स्पष्ट करते समय पाठ में कही गई बात और उसके आशय का संबंध बनाए रखना चाहिए।

चरण 1: पाठ से आधार पहचानें गद्यांश में वाणी और क्रिया का मूल विचार को कहा गया है। अनियंत्रित विचार बोलने के ढंग को प्रभावित करते हैं। मनुष्य कभी बात को बढ़ा देता है, कभी कहने योग्य बात छिपा देता है और कभी उसे दूसरे ढंग से प्रस्तुत करता है। इससे कथन वास्तविकता से अलग हो जाता है। प्रश्न का पहला भाग इसी व्यवहार को स्पष्ट करने के लिए है।

चरण 2: आशय स्पष्ट करें लेखक इसका उपाय मितभाषिता बताता है। कम बोलने वाला व्यक्ति बिना विचारे नहीं बोलता, बल्कि प्रत्येक

शब्द तौलकर प्रयोग करता है। आवश्यकता होने पर सारयुक्त शब्द कहना और अनावश्यक विस्तार से बचना अतिशयोक्ति रोकता है। उत्तर के दूसरे भाग में कम बोलने के साथ विचारपूर्वक बोलने की बात भी होनी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष मनुष्य बात बढ़ा-चढ़ाकर, छिपाकर या बदलकर कहता है। इससे बचने के लिए मितभाषी बनकर सोच-समझकर प्रत्येक शब्द तौलकर बोलना चाहिए।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का मुख्य शब्द पहचानें, फिर उसी से संबंधित पंक्ति चुनकर संक्षिप्त उत्तर लिखें; इस प्रश्न में अतिशयोक्ति और मितभाषिता पर केंद्रित रहें।

2(ख). मौन के दो लाभों की चर्चा कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए पाठ के शब्द और उनका संदर्भ है; उसी से मुख्य भाव पहचानना चाहिए।
- मौन के लाभ को स्पष्ट करते समय पाठ में कही गई बात और उसके आशय का संबंध बनाए रखना चाहिए।

चरण 1: पाठ से आधार पहचानें गद्यांश के अंतिम अनुच्छेद में मौन के लाभ क्रम से दिए गए हैं। प्रारंभिक अवस्था में काम के दबाव से राहत मिलने की बात कही गई है। इसलिए पहला लाभ मानसिक विश्राम और दबाव में कमी के रूप में लिखा जा सकता है। यह लाभ गद्यांश में सीधे व्यक्त है; इसके लिए कोई बाहरी उदाहरण जोड़ना आवश्यक नहीं है।

चरण 2: आशय स्पष्ट करें नियमित अभ्यास के बाद व्यक्ति अपने भीतर शक्ति और क्षमता का अनुभव करता है। यही दूसरा लाभ है। मौन धीरे-धीरे उसकी शारीरिक और आध्यात्मिक आवश्यकता बनता है। उत्तर में दो स्पष्ट लाभ अलग रखना उचित है, ताकि राहत और आंतरिक शक्ति का अनुभव एक ही अस्पष्ट कथन में न मिल जाएँ।

चरण 3: निष्कर्ष मौन काम के दबाव से राहत देता है। इसके नियमित अभ्यास से व्यक्ति अपने भीतर शक्ति और क्षमता का अनुभव करता है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का मुख्य शब्द पहचानें, फिर उसी से संबंधित पंक्ति चुनकर संक्षिप्त उत्तर लिखें; इस प्रश्न में मौन के लाभ पर केंद्रित रहें।

2(ग). वाणी की तपस्या किसे कहा गया है ? समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए पाठ के शब्द और उनका संदर्भ है; उसी से मुख्य भाव पहचानना चाहिए।
- वाणी की तपस्या को स्पष्ट करते समय पाठ में कही गई बात और उसके आशय का संबंध बनाए रखना चाहिए।

चरण 1: पाठ से आधार पहचानें गद्यांश में गीता के संदर्भ से वाणी की तपस्या का स्वरूप बताया गया है। ऐसी वाणी किसी को उत्तेजित न करे; वह सत्य बोलने के साथ प्रिय और हितकारी भी हो। सत्य, प्रियता, हित और अनुद्वेग चारों विशेषताएँ एक साथ आवश्यक हैं। केवल कम बोलना इस परिभाषा का पूरा उत्तर नहीं है।

चरण 2: आशय स्पष्ट करें तपस्या का आशय वाणी पर साधा गया संयम है। वक्ता विचार करके ऐसे शब्द चुने जो सच हों, सुनने वाले के हित में हों और उत्तेजना न फैलाएँ। लेखक इसे कठिन किंतु संभव मानता है। उत्तर में इस अभ्यास की कठिनाई के स्थान पर उसकी मुख्य विशेषताओं को प्राथमिकता देनी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष जो वाणी उत्तेजित न करे तथा सच्ची, प्रिय और हितकारी हो, उसका संयमित प्रयोग वाणी की तपस्या कहलाता है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का मुख्य शब्द पहचानें, फिर उसी से संबंधित पंक्ति चुनकर संक्षिप्त उत्तर लिखें; इस प्रश्न में वाणी की तपस्या पर केंद्रित रहें।

2(घ). गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक गद्यांश के केंद्रीय विचार का संक्षिप्त परिचय देता है।
- मितभाषिता और मौन का अभ्यास इस गद्यांश के सभी अनुच्छेदों को जोड़ते हैं।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानें लेखक आरंभ में सरल व्यवहार की बात करता है और उसके बाद कम बोलने, विचारों को नियंत्रित करने तथा मौन का अभ्यास करने के लाभ समझाता है। इसलिए शीर्षक केवल सरलता तक सीमित नहीं होना चाहिए।

चरण 2: उपयुक्त शीर्षक चुनें मौन और मितभाषिता को केंद्र में रखने वाला शीर्षक पूरे गद्यांश का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें वाणी के संयम और उसके महत्त्व, दोनों का संकेत मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है—मौन और मितभाषिता का महत्त्व।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय तीनों अनुच्छेदों को जोड़ने वाला विचार खोजें; केवल पहले वाक्य को आधार न बनाएँ।

2(ङ). लेखक ने व्यक्तित्व को सरल बनाने के क्या उपाय बताए हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर गद्यांश के आरंभ में बताए गए आचरण पर आधारित होना चाहिए।
- सरलता में मन की स्पष्टता, वाणी की शालीनता तथा स्वयं और दूसरों की स्वीकृति सम्मिलित हैं।

चरण 1: बताए गए उपाय पहचानें लेखक के अनुसार मन की बात छिपाने के बजाय उसे शालीन ढंग से कहना चाहिए। बात की स्पष्टता के साथ व्यवहार में मुसकराहट भी होनी चाहिए। इससे सरलता केवल बोलने की शैली तक सीमित नहीं रहती, बल्कि आचरण में व्यक्त होती है।

चरण 2: स्वीकृति का महत्त्व समझें अपने व्यक्तित्व को स्वीकार करना और दूसरों को भी स्वीकार करना आवश्यक है। लेखक इन्हीं छोटे व्यवहारों से सरलता के क्रमशः विकसित होने की बात करता है। अतः उत्तर में स्पष्ट कथन, शालीनता, मुसकराहट और स्वीकृति, सभी मुख्य उपाय रखें। यहाँ सरलता का आधार दूसरों को बदलना नहीं, अपने मन और व्यवहार में सहजता लाना है। स्पष्टता के साथ विनम्रता बनाए रखना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष व्यक्तित्व सरल बनाने के लिए मन की बात शालीनता से कहनी चाहिए, मुसकराहट बिखेरनी चाहिए तथा स्वयं को और दूसरों को स्वीकार करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: सरलता के उपाय लिखते समय गद्यांश के पहले अनुच्छेद से कथन, शालीनता, मुसकराहट और स्वीकृति चुनें।

2(च). मितभाषी किसे कहा जाता है ? स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मितभाषिता का अर्थ आवश्यकता के अनुरूप कम और सार्थक शब्द बोलना है।
- मितभाषी बोल सकने पर भी व्यर्थ शब्द नहीं बोलता और हर शब्द सोचकर चुनता है।

चरण 1: व्यवहारगत पहचान बताएँ गद्यांश में मितभाषी व्यक्ति घटनाओं को दर्शक की तरह देखता है और किसी बात को पकड़कर नहीं

बैठता। बोलने की क्षमता होते हुए भी वह अनावश्यक बातें नहीं करता। इसलिए केवल चुप रहने वाले व्यक्ति को मितभाषी कहना अधूरा होगा।

चरण 2: वाणी का संयम स्पष्ट करें मितभाषी एक शब्द से काम चलने पर दो शब्द नहीं बोलता। वह बिना विचारे बोलने के स्थान पर हर शब्द को तौलकर प्रयोग करता है। उसकी संक्षिप्त वाणी में आवश्यकता, विचार और सार्थकता होती है; यही मौन की साधना का पहला चरण है। उसका संयम बोलने की अक्षमता नहीं है। वह बोल सकता है, किंतु जरूरत के अनुरूप ही शब्द चुनता है; यही भेद परिभाषा को पूरा करता है।

चरण 3: निष्कर्ष मितभाषी वह है जो आवश्यकता पड़ने पर ही सोचकर सार्थक शब्द बोलता है, व्यर्थ नहीं बोलता तथा घटनाओं को दर्शक की तरह देखता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में केवल कम बोलना न लिखें; सोचकर, आवश्यक और सार्थक शब्द बोलने की शर्त भी जोड़ें।

2(छ). आशय स्पष्ट कीजिए, 'मौन ही सर्वोत्तम भाषण है ।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथन का आशय गद्यांश में दिए गए वाणी के संयम और शक्ति के संरक्षण से स्पष्ट होता है।
- मौन का अर्थ आवश्यक सत्य को छिपाना नहीं, बल्कि व्यर्थ बोलने से बचना है।

चरण 1: शब्दों का संदर्भ समझें लेखक मितभाषी के लिए कहता है कि वह एक शब्द से काम चलने पर दो शब्द नहीं बोलता। अत: मौन की श्रेष्ठता का संबंध अनावश्यक भाषण के त्याग से है। यह कथन हर परिस्थिति में बिल्कुल न बोलने का निर्देश नहीं देता।

चरण 2: निहित संदेश स्पष्ट करें कम बोलने से शक्ति व्यर्थ नहीं जाती और विचार करने का अवसर मिलता है। आवश्यकता पड़ने पर विचारपूर्वक सारयुक्त शब्द ही प्रयुक्त होते हैं। इस प्रकार संयमित मौन वाणी को अधिक प्रभावी बनाता है और व्यक्ति को अपने भीतर शक्ति का अनुभव कराता है। इसलिए कथन में मौन और विचार का संबंध प्रमुख है। अनावश्यक शब्दों को रोकना ही आवश्यक बात की स्पष्ट और संयमित अभिव्यक्ति का आधार बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष आशय है कि व्यर्थ बोलने के बजाय मौन रहना श्रेष्ठ है; इससे शक्ति बचती है, विचार संयमित होते हैं और आवश्यक वाणी सार्थक बनती है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ में मौन को पूर्ण चुप्पी न बनाएँ; उसे व्यर्थ वाणी के त्याग और सार्थक कथन से जोड़ें।

2(ज). कम बोलने से क्या लाभ हैं और अधिक बोलने का क्या परिणाम होता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में कम बोलने के लाभ और अधिक बोलने के परिणाम, दोनों अपेक्षित हैं।
- उत्तर में गद्यांश के शक्ति-संरक्षण तथा अतिशयोक्ति वाले अंशों को जोड़ना चाहिए।

चरण 1: कम बोलने के लाभ बताएँ आवश्यकता पड़ने पर ही सारयुक्त शब्द बोलने से शक्ति का अपव्यय रुकता है। कम बोलने वाला व्यक्ति पहले विचार करता है और फिर अपने शब्द तौलकर कहता है। इससे उसकी वाणी संयमित रहती है और बिना सोचे बोलने की प्रवृत्ति घटती है।

चरण 2: अधिक बोलने के परिणाम बताएँ गद्यांश में बताया गया है कि व्यक्ति जाने-अनजाने बात बढ़ा-चढ़ाकर कह सकता है, कहने योग्य बात छिपा सकता है या उसे दूसरे ढंग से प्रस्तुत कर सकता है। अधिक और असंयमित वाणी में शक्ति का अपव्यय होता है तथा ऐसी त्रुटियों की संभावना बढ़ती है। उत्तर में मौन के सभी लाभों की सूची देने के बजाय प्रश्न के दोनों पक्षों के बीच यह संबंध स्पष्ट करना

पर्याप्त है।

चरण 3: निष्कर्ष कम बोलने से शक्ति बचती है और शब्द विचारपूर्वक चुने जाते हैं; अधिक बोलने से शक्ति का अपव्यय होता है तथा अतिशयोक्ति की संभावना बढ़ती है।

त्वरित सुझाव: दोनों पक्ष अवश्य लिखें: कम बोलने में शक्ति और विवेक; अधिक बोलने में अपव्यय और अतिशयोक्ति।

3(क). निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 20-30 शब्दों में दीजिए : जनसंचार के दो कार्यों का उल्लेख कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनसंचार एक साथ व्यापक जनसमूह तक संदेश पहुँचाने की प्रक्रिया है।
- सूचना देना और शिक्षित करना इसके प्रमुख कार्यों में सम्मिलित हैं।

चरण 1: पहला कार्य समझें जनसंचार समाज में होने वाली घटनाओं, निर्णयों और परिवर्तनों की सूचना बड़ी संख्या में लोगों तक पहुँचाता है। समाचारों के माध्यम से लोगों को अपने परिवेश की जानकारी मिलती है।

चरण 2: दूसरा कार्य समझें जनसंचार ज्ञानवर्धक सामग्री देकर जनता को शिक्षित भी करता है। इस कार्य का संबंध केवल विद्यालयी शिक्षा से नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, पर्यावरण और सामाजिक जीवन की उपयोगी जानकारी से भी है।

चरण 3: निष्कर्ष जनसंचार के दो प्रमुख कार्य हैं—समसामयिक घटनाओं की सूचना व्यापक जनसमूह तक पहुँचाना तथा उपयोगी ज्ञान देकर लोगों को शिक्षित और जागरूक बनाना।

त्वरित सुझाव: दो कार्य माँगे गए हैं, इसलिए सूचना देने और शिक्षित करने को अलग-अलग स्पष्ट क्रियाओं में लिखें।

3(ख). निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 20-30 शब्दों में दीजिए : रेडियो-समाचारों की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; श्रोता समाचार सुनता है, पढ़ता नहीं।
- इसलिए भाषा सहज, स्पष्ट और बोलचाल के निकट हो तथा वाक्य छोटे हों।

चरण 1: सहज शब्दों का महत्त्व बताएँ रेडियो पर समाचार सुनते समय श्रोता किसी कठिन शब्द को फिर से पढ़ नहीं सकता। इसलिए समाचारों की भाषा सरल, प्रचलित और बोलचाल के निकट होनी चाहिए ताकि अर्थ तुरंत समझ में आ जाए।

चरण 2: छोटे वाक्यों की आवश्यकता बताएँ लंबे और उलझे वाक्य सुनते समय समझने में कठिनाई पैदा करते हैं। छोटे, सीधे और स्पष्ट वाक्य सूचना को ग्रहण करना आसान बनाते हैं। अत: सरल शब्दावली और संक्षिप्त वाक्य रेडियो समाचार की दो आवश्यक भाषिक विशेषताएँ हैं।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो-समाचारों की भाषा सरल, सहज और बोलचाल के निकट होती है; उसमें छोटे, सीधे तथा स्पष्ट वाक्य होते हैं, जिससे सूचना तुरंत समझ आती है।

त्वरित सुझाव: रेडियो को सुनने का माध्यम मानकर सोचें: कठिन शब्द और लंबे वाक्य श्रोता की समझ में बाधा डालते हैं।

3(ग). निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 20-30 शब्दों में दीजिए : प्रिंट मीडिया किसे कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रिंट मीडिया जनसंचार का मुद्रित माध्यम है। इसमें कागज पर छपी सामग्री पाठकों तक पहुँचती है।
- परिभाषा में माध्यम का स्वरूप और उसके प्रमुख उदाहरण दोनों दिए जाते हैं।

चरण 1: माध्यम का स्वरूप पहचानना प्रिंट शब्द का संबंध मुद्रण से है। इसलिए इस माध्यम में सूचना कागज पर छपकर पाठक तक पहुँचती है और पढ़ी जाती है।

चरण 2: प्रमुख उदाहरण जोड़ना समाचारपत्र और पत्रिकाएँ इसके प्रमुख उदाहरण हैं। पुस्तकों जैसी अन्य मुद्रित सामग्रियों को भी इस व्यापक श्रेणी में रखा जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष कागज पर मुद्रित होकर पाठकों तक सूचना, विचार तथा समाचार पहुँचाने वाले माध्यम प्रिंट मीडिया कहलाते हैं। समाचारपत्र और पत्रिकाएँ इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में कागज पर मुद्रण की विशेषता और समाचारपत्र जैसे उदाहरण अवश्य जोड़ें।

3(घ). निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 20-30 शब्दों में दीजिए : संपादकीय किसे कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय किसी महत्त्वपूर्ण समसामयिक विषय पर समाचारपत्र की संस्थागत राय प्रस्तुत करता है।
- इसमें विषय का विश्लेषण, तर्क और दृष्टिकोण प्रमुख होते हैं; यह केवल घटनाविवरण नहीं होता।

चरण 1: समाचार से अंतर समझना समाचार किसी घटना की सूचना देता है, जबकि संपादकीय उस घटना या सार्वजनिक मुद्दे पर विचार करता है और उसका महत्त्व स्पष्ट करता है।

चरण 2: संस्थागत दृष्टिकोण पहचानना संपादकीय समाचारपत्र की नीति और विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है। इसका उद्देश्य पाठक को मुद्दे पर विचार करने का आधार देना है।

चरण 3: निष्कर्ष किसी महत्त्वपूर्ण समसामयिक विषय पर समाचारपत्र की नीति, विचार और दृष्टिकोण व्यक्त करने वाला विश्लेषणात्मक लेख संपादकीय कहलाता है। इसमें तर्कपूर्ण टिप्पणी प्रस्तुत की जाती है।

त्वरित सुझाव: संपादकीय की पहचान बताते समय समाचारपत्र की संस्थागत राय का उल्लेख करना न भूलें।

3(ङ). निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 20-30 शब्दों में दीजिए : पत्रकारिता का मूल तत्त्व क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता का मूल तत्त्व समाचार है; समाचार के माध्यम से जनसाधारण को महत्त्वपूर्ण घटनाओं की सूचना मिलती है।
- विश्वसनीय समाचार के लिए तथ्यपरकता, सत्यता और निष्पक्षता आवश्यक गुण हैं।

चरण 1: मूल तत्त्व पहचानना पत्रकारिता में घटनाओं की जानकारी एकत्र की जाती है, उसकी जाँच होती है और उसे समाचार के रूप में लोगों तक पहुँचाया जाता है। इसलिए समाचार इसका केंद्र है।

चरण 2: समाचार का उद्देश्य स्पष्ट करना समाचार का उद्देश्य जनता को सूचित करना है। तथ्य की पुष्टि और निष्पक्ष प्रस्तुति इस उद्देश्य

को पूरा करती हैं तथा पाठक का विश्वास बनाए रखती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पत्रकारिता का मूल तत्त्व समाचार है। सत्य, तथ्यपरक और निष्पक्ष समाचारों के माध्यम से जनता को महत्त्वपूर्ण घटनाओं तथा सार्वजनिक विषयों की विश्वसनीय जानकारी दी जाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर की शुरुआत समाचार से करें; सत्यता और निष्पक्षता को उसके आवश्यक गुणों के रूप में जोड़ें।

4. 'चुनावों का मौसम' विषय पर एक फीचर 150 शब्दों में लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फीचर किसी विषय को रोचक, संवेदनशील और चित्रात्मक शैली में प्रस्तुत करता है। इसमें सामाजिक जीवन और मानवीय अनुभवों को महत्त्व दिया जाता है।
- चुनावों पर फीचर में वातावरण, प्रचार, नागरिकों की अपेक्षाएँ और मतदाता की जिम्मेदारी को एक सूत्र में जोड़ा जा सकता है।

चरण 1: प्रारूप और शैली चुनना एक आकर्षक शीर्षक दें और उसके नीचे लेखक का नाम लिखें। आरंभ में चुनावी वातावरण का सजीव दृश्य उभारें। वर्णन की भाषा सहज और प्रवाहपूर्ण रखें, ताकि पाठक स्वयं उस हलचल को अनुभव कर सके। फीचर को केवल सूचनाओं की सूची न बनाएँ।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना बनाना बाजार और गलियों के प्रचार से आरंभ करें। फिर आम लोगों की बातचीत, अलग-अलग वर्गों की अपेक्षाओं और चुनावी वादों का उल्लेख करें। अंत में विवेकपूर्ण मतदान का संदेश स्वाभाविक रूप से जोड़ें। किसी दल या वास्तविक प्रत्याशी के बारे में अप्रमाणित आरोप लगाने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श फीचर चुनावों का मौसम

लेखक : एक जागरूक नागरिक

सुबह की चाय के साथ आजकल मौसम नहीं, चुनाव की चर्चा होती है। गलियों में रंगीन झंडे लहरा रहे हैं और दीवारों पर प्रत्याशियों के मुसकराते चेहरे दिखाई देते हैं। बाजार का नुक्कड़ छोटी संसद बन गया है; कोई पुराने काम गिनाता है, तो कोई अधूरे वादों का हिसाब माँगता है।

प्रचार गाड़ियों की आवाजों के बीच जनता की उम्मीदें भी सुनाई देती हैं। युवाओं को रोजगार चाहिए, किसानों को फसल का उचित मूल्य और बस्तियों को साफ पानी। सभाओं में बड़े वादे होते हैं, लेकिन सजग मतदाता उनके पीछे ठोस योजना खोजता है।

यह मौसम केवल नारों और रैलियों का नहीं, नागरिक जिम्मेदारी का भी है। जाति, धर्म, प्रलोभन और अफवाहों से ऊपर उठकर उम्मीदवार के चरित्र तथा काम को परखना जरूरी है। मतदान के दिन हमारी एक उँगली आने वाले वर्षों की दिशा तय करती है। लोकतंत्र का यह उत्सव तभी सार्थक होगा, जब हर मतदाता सोचकर अपना मत देगा।

चरण 4: निष्कर्ष इस फीचर में चुनावी वातावरण का सजीव चित्रण, जनता की अपेक्षाएँ और जिम्मेदार मतदान का विचार जुड़े हैं। आकर्षक शीर्षक तथा सहज भाषा विषय को प्रभावशाली बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: फीचर की शुरुआत किसी जीवंत दृश्य से करें और उसी विषय से जुड़ी मानवीय अपेक्षाओं तक पहुँचें।

5(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : किसान का एक दिन [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद में एक मुख्य विषय को क्रमबद्ध ढंग से विकसित किया जाता है। किसान की दिनचर्या का वर्णन करते समय प्रातःकाल से संध्या तक की गतिविधियों को स्वाभाविक क्रम देना चाहिए।
- श्रम, खेती की अनिश्चितता और अन्नदाता के प्रति सम्मान को ठोस प्रसंगों से व्यक्त करना चाहिए। भाषा सरल, चित्रात्मक और संवेदनशील हो तथा लगभग 150 शब्दों की सीमा का ध्यान रहे।

चरण 1: प्रारूप और भाषा का चयन विषय के अनुरूप शीर्षक दें और मुख्य उत्तर को एक सतत अनुच्छेद में लिखें। पत्र की तरह पता, संबोधन या हस्ताक्षर देने की आवश्यकता नहीं है। वर्णन में अनावश्यक दोहराव से बचें और सभी वाक्यों को केंद्रीय विषय से जोड़ें।

चरण 2: विषय-वस्तु की रूपरेखा सुबह खेत की ओर प्रस्थान, पशुओं की देखभाल, सिंचाई और निराई, दोपहर का विश्राम तथा शाम की वापसी को क्रम में रखें। अंत में किसान के श्रम का सामाजिक महत्त्व प्रकट करें। किसान को केवल दुख का पात्र बनाने के बजाय उसके कौशल, लगन और आशा को भी स्थान दें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श अनुच्छेद किसान का एक दिन

सूर्योदय से पहले ही किसान की नींद खुल जाती है। वह पशुओं को चारा देता है और हल्का नाश्ता करके खेत की ओर चल पड़ता है। खेत पहुँचकर पहले फसल का निरीक्षण करता है। कहीं पानी की कमी है, तो कहीं खरपतवार उग आए हैं। वह सिंचाई करता है, मेड़ों को ठीक करता है और निराई में जुट जाता है। धूप तेज होने पर भी उसके हाथ नहीं रुकते। दोपहर में पेड़ की छाया तले बैठकर वह घर से लाई रोटी और सब्जी खाता है। थोड़ा विश्राम करने के बाद फिर काम शुरू हो जाता है। कभी बीज और खाद की चिंता उसे घेरती है, तो कभी बदलते मौसम का भय। फिर भी लहलहाती फसल देखकर उसका मन प्रसन्न हो उठता है। शाम को घर लौटकर वह पशुओं की देखभाल करता है और अगले दिन की तैयारी करता है। किसान का दिन कठिन श्रम और आशा से भरा होता है। उसका परिश्रम ही हमारी थाली तक अन्न पहुँचाता है।

चरण 4: निष्कर्ष किसान के दिन का चित्रण समयक्रम, वास्तविक कृषि कार्यों और उसके परिश्रम के प्रति सम्मान के साथ किया गया है। अनुच्छेद का केंद्रीय भाव अन्नदाता की मेहनत और आशा है।

त्वरित सुझाव: पहले सुबह, दोपहर और शाम के लिए एक-एक ठोस गतिविधि चुनें; फिर किसान की आशा से अनुच्छेद का समापन करें।

5(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : मोबाइल के बिन एक दिन [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुभवपरक अनुच्छेद में किसी घटना का वर्णन और उससे उत्पन्न विचार एक ही केंद्रीय विषय से जुड़े रहने चाहिए। मोबाइल के बिना बिताया दिन इसकी मुख्य घटना है।
- आरंभिक असुविधा, समय के नए उपयोग और अनुभव से मिली सीख को क्रम में रखने से अनुच्छेद प्रभावशाली बनता है। लगभग 150 शब्दों में सरल तथा सहज भाषा का प्रयोग करें।

चरण 1: प्रारूप और भाषा का चयन विषय के अनुरूप शीर्षक दें और मुख्य उत्तर को एक सतत अनुच्छेद में लिखें। पत्र की तरह पता, संबोधन या हस्ताक्षर देने की आवश्यकता नहीं है। वर्णन में अनावश्यक दोहराव से बचें और सभी वाक्यों को केंद्रीय विषय से जोड़ें।

चरण 2: विषय-वस्तु की रूपरेखा आरंभ में मोबाइल उपलब्ध न होने की स्थिति बताएँ। फिर संपर्क की कठिनाई, परिवार से बातचीत, पुस्तक पढ़ने और खेल में समय बिताने जैसे अनुभव जोड़ें। निष्कर्ष में तकनीक के संतुलित उपयोग की सीख रखें; मोबाइल के सभी उपयोगों को व्यर्थ न बताएँ।

चरण 3: पूर्ण आदर्श अनुच्छेद मोबाइल के बिन एक दिन

कल सुबह मेरा मोबाइल अचानक बंद हो गया। पहले तो मुझे बहुत बेचैनी हुई। न संदेश देख पा रहा था, न मित्रों से तुरंत बात कर पा रहा था। बार-बार हाथ अनजाने में जेब की ओर बढ़ जाता था। फिर मैंने तय किया कि इस दिन को अलग ढंग से बिताऊँगा। नाश्ते के समय परिवार के साथ खुलकर बातचीत की। माँ की बातें ध्यान से सुनीं और घर के छोटे कामों में सहायता की। इसके बाद कई दिनों से अधूरी पड़ी पुस्तक पढ़ी। पढ़ते समय किसी सूचना की आवाज ने मेरा ध्यान नहीं बाँटा। शाम को मित्रों के साथ मैदान में खेलने गया। लौटकर दादी से उनके बचपन के किस्से सुने। रात तक मेरी शुरुआती बेचैनी गायब हो चुकी थी। लगा कि दिन सामान्य से अधिक लंबा और सुखद था। मोबाइल सुविधाजनक साधन अवश्य है, लेकिन उसका लगातार उपयोग हमारा बहुत समय ले लेता है। इस एक दिन ने मुझे संबंधों, एकाग्रता और वास्तविक जीवन का महत्त्व समझाया।

चरण 4: निष्कर्ष मोबाइल के बिना बिताया दिन आरंभिक बेचैनी से आगे बढ़कर परिवार, अध्ययन और खेल से जुड़ने का अवसर बनता है। अनुभव तकनीक के विवेकपूर्ण उपयोग की प्रेरणा देता है।

त्वरित सुझाव: केवल मोबाइल के नुकसान गिनाने के बजाय दिन की घटनाएँ लिखें और उन्हीं घटनाओं से संतुलित उपयोग की सीख निकालें।

5(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : क्यों पढ़ूँ मैं हिंदी [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद किसी एक केंद्रीय विचार का क्रमबद्ध, संक्षिप्त और सुसंगत विस्तार होता है। इसमें अनावश्यक प्रसंग और विषय से हटकर चर्चा नहीं होनी चाहिए।
- प्रस्तावना से विषय आरंभ करें, उदाहरणों से उसका विस्तार करें और अंतिम वाक्य में अपना निष्कर्ष रखें। लगभग 150 शब्दों की सीमा का ध्यान रखें।

चरण 1: प्रारूप और विषय की रूपरेखा शीर्षक के बाद एक ही अनुच्छेद में विचार प्रस्तुत करें। आरंभ में विषय का परिचय, मध्य में उसके प्रमुख पक्ष तथा अंत में स्पष्ट निष्कर्ष रखें। इस विधा में पत्र की तरह पता, संबोधन या हस्ताक्षर नहीं दिए जाते।

चरण 2: विचारों का चयन और क्रम हिंदी के अध्ययन को केवल परीक्षा से न जोड़कर अभिव्यक्ति, संस्कृति, संपर्क और अवसरों से जोड़ना चाहिए। छोटे और स्पष्ट वाक्य लिखें। उदाहरण मुख्य विचार को पुष्ट करें और सभी वाक्यों में तारतम्य बना रहे। सामान्य कथनों को दोहराने के बजाय प्रत्येक वाक्य में विषय का नया पक्ष जोड़ें।

चरण 3: पूर्ण नमूना अनुच्छेद **क्यों पढ़ूँ मैं हिंदी**

क्यों पढ़ूँ मैं हिंदी? यह प्रश्न मेरे लिए अपनी पहचान और अभिव्यक्ति से जुड़ा है। हिंदी मुझे अपने विचार सहजता से रखने और दूसरों की भावनाएँ समझने की शक्ति देती है। इसके साहित्य में समाज के सुख-दुःख, संघर्ष और सपनों का संसार मिलता है। कबीर, प्रेमचंद और महादेवी की रचनाएँ मेरी संवेदना बढ़ाती हैं तथा जीवन को नई दृष्टि से देखना सिखाती हैं। देश के अनेक भागों में हिंदी संपर्क का माध्यम है; इसलिए उसका ज्ञान लोगों से जुड़ने में सहायक होता है। पत्रकारिता, अनुवाद, शिक्षण, विज्ञापन और डिजिटल माध्यमों में भी हिंदी उपयोगी है। अन्य भाषाएँ सीखते हुए हिंदी पढ़ना मेरे ज्ञान का विस्तार करता है। भाषा का अच्छा ज्ञान स्पष्ट सोचने, तर्क देने और आत्मविश्वास से बोलने में मदद करता है। इसलिए मैं हिंदी केवल अच्छे अंक पाने के लिए नहीं, बल्कि सजग, संवेदनशील और प्रभावी नागरिक बनने के लिए पढ़ना चाहता हूँ।

चरण 4: निष्कर्ष यह अनुच्छेद विषय के केंद्रीय विचार को परिचय, तर्क, उदाहरण और समापन के क्रम में प्रस्तुत करता है। उत्तर लिखते समय इसी प्रकार एक विचार की निरंतरता बनाए रखें।

त्वरित सुझाव: पहले मुख्य विचार और उसके तीन उपयोगी पक्ष चुन लें; फिर लगभग 150 शब्दों में एक सुसंगत अनुच्छेद लिखें।

5(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : परिश्रम का कोई विकल्प नहीं [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद किसी एक केंद्रीय विचार का क्रमबद्ध, संक्षिप्त और सुसंगत विस्तार होता है। इसमें अनावश्यक प्रसंग और विषय से हटकर चर्चा नहीं होनी चाहिए।
- प्रस्तावना से विषय आरंभ करें, उदाहरणों से उसका विस्तार करें और अंतिम वाक्य में अपना निष्कर्ष रखें। लगभग 150 शब्दों की सीमा का ध्यान रखें।

चरण 1: प्रारूप और विषय की रूपरेखा शीर्षक के बाद एक ही अनुच्छेद में विचार प्रस्तुत करें। आरंभ में विषय का परिचय, मध्य में उसके प्रमुख पक्ष तथा अंत में स्पष्ट निष्कर्ष रखें। इस विधा में पत्र की तरह पता, संबोधन या हस्ताक्षर नहीं दिए जाते।

चरण 2: विचारों का चयन और क्रम निरंतर प्रयास को सही दिशा, अभ्यास और धैर्य से जोड़ते हुए विषय का व्यावहारिक पक्ष स्पष्ट करना चाहिए। छोटे और स्पष्ट वाक्य लिखें। उदाहरण मुख्य विचार को पुष्ट करें और सभी वाक्यों में तारतम्य बना रहे। सामान्य कथनों को दोहराने के बजाय प्रत्येक वाक्य में विषय का नया पक्ष जोड़ें।

चरण 3: पूर्ण नमूना अनुच्छेद **परिश्रम का कोई विकल्प नहीं**

जीवन में सफलता की इच्छा सभी करते हैं, पर उसे साकार करने के लिए निरंतर परिश्रम आवश्यक है। केवल सपने देखने या भाग्य के भरोसे बैठने से लक्ष्य प्राप्त नहीं होता। किसान खेत में श्रम करता है, खिलाड़ी प्रतिदिन अभ्यास करता है और विद्यार्थी नियमित अध्ययन से ज्ञान अर्जित करता है। उनकी उपलब्धियों के पीछे अनुशासन, धैर्य और लगातार प्रयास होते हैं। कठिनाइयाँ आने पर मेहनती व्यक्ति अपनी कमियाँ पहचानता है और कार्यपद्धति सुधारकर फिर आगे बढ़ता है। परिश्रम का अर्थ बिना सोचे काम करना नहीं है; सही दिशा में समय का सदुपयोग भी आवश्यक है। साधन और प्रतिभा सहायक हो सकते हैं, किंतु अभ्यास के बिना उनका पूरा लाभ नहीं मिलता। दूसरों की सफलता देखकर ईर्ष्या करने के बजाय हमें अपने लक्ष्य की तैयारी करनी चाहिए। ईमानदार श्रम आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता बढ़ाता है। अतः सफलता का स्थायी मार्ग यही है कि हम योजनाबद्ध ढंग से मेहनत करें और असफलता से सीखते रहें।

चरण 4: निष्कर्ष यह अनुच्छेद विषय के केंद्रीय विचार को परिचय, तर्क, उदाहरण और समापन के क्रम में प्रस्तुत करता है। उत्तर लिखते समय इसी प्रकार एक विचार की निरंतरता बनाए रखें।

त्वरित सुझाव: पहले मुख्य विचार और उसके तीन उपयोगी पक्ष चुन लें; फिर लगभग 150 शब्दों में एक सुसंगत अनुच्छेद लिखें।

---

6. 'बदलता ग्रामीण परिवेश' विषय पर एक आलेख 150 शब्दों में लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख किसी सामाजिक विषय का तथ्यपरक, सुव्यवस्थित और विचारपूर्ण विवेचन होता है। इस विषय में ग्रामीण जीवन के पुराने और नए रूप का संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।
- शीर्षक और लेखक के नाम के बाद भूमिका, परिवर्तन के प्रमुख पक्ष और निष्कर्ष क्रम से रखे जाते हैं। विकास के लाभों के साथ उसकी चुनौतियों का विवेकपूर्ण उल्लेख आलेख को संतुलित बनाता है।

चरण 1: रूपरेखा और विषय-विस्तार आलेख का शीर्षक प्रश्न में दिए विषय के अनुरूप रखा जाएगा। आरंभ में गाँवों में हो रहे परिवर्तन का संकेत, मध्य में शिक्षा, संचार, कृषि, रोजगार और सामाजिक संबंधों का विवेचन तथा अंत में समावेशी विकास का सुझाव दिया जाएगा। केवल सुविधाओं की सूची बनाना पर्याप्त नहीं है; उनके प्रभाव भी स्पष्ट होने चाहिए।

चरण 2: भाषा और प्रस्तुति का चयन भाषा औपचारिक किंतु सहज रखनी चाहिए। ग्रामीण विकास का चित्र एकतरफा प्रशंसा या शिकायत में नहीं बदलना चाहिए। सुविधाओं के विस्तार के साथ पलायन, प्रदूषण और परंपरागत सहयोग में कमी का उल्लेख संतुलन लाता है। नीचे शीर्षक और लेखक के नाम को छोड़कर आलेख का मुख्य भाग 150 शब्दों का है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श आलेख बदलता ग्रामीण परिवेश

लेखक: अमित कुमार

भारत के गाँव आज परिवर्तन के नए दौर से गुजर रहे हैं। सड़क, बिजली, मोबाइल और इंटरनेट ने ग्रामीण जीवन को शहरों से जोड़ दिया है। किसान मौसम की जानकारी, उन्नत बीज और बाजार भाव जानकर खेती के बेहतर निर्णय लेने लगे हैं। विद्यालयों और स्वास्थ्य केंद्रों के विस्तार से शिक्षा तथा उपचार की सुविधाएँ बढ़ी हैं।

महिलाएँ स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से आर्थिक रूप से सक्रिय हो रही हैं। युवा खेती के साथ छोटे उद्योग, व्यापार और डिजिटल सेवाओं में अवसर खोज रहे हैं। फिर भी विकास की यह तस्वीर पूरी नहीं है। बेरोजगारी, शहरों की ओर पलायन, जलसंकट और बढ़ता प्रदूषण गंभीर चुनौतियाँ हैं। उपभोक्तावाद के कारण सामूहिकता और पारंपरिक सहयोग भी कमजोर पड़ रहे हैं।

आवश्यक है कि आधुनिक सुविधाओं के साथ स्थानीय संस्कृति, पर्यावरण और मानवीय संबंधों की रक्षा हो। संतुलित योजनाओं तथा ग्रामीणों की भागीदारी से गाँव समृद्ध, आत्मनिर्भर और रहने योग्य बन सकते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष यह आलेख ग्रामीण परिवर्तन के लाभ, चुनौतियाँ और समाधान प्रस्तुत करता है। विषयानुकूल शीर्षक, लेखक का नाम तथा 150 शब्दों का मुख्य भाग इसकी अपेक्षित प्रस्तुति पूर्ण करते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले सुविधाओं के दो लाभ और दो चुनौतियाँ चुनें; फिर अंतिम अनुच्छेद में दोनों को जोड़ता हुआ व्यावहारिक सुझाव दें।

अथवा

6. हाल ही में आपके द्वारा पढ़ी गई किसी कहानी की पुस्तक की संतुलित समीक्षा लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुस्तक-समीक्षा में पुस्तक का परिचय, उसकी विषयवस्तु और शिल्प का विवेचन तथा गुण-दोषों पर आधारित अपना निर्णय दिया जाता है। संतुलित समीक्षा केवल प्रशंसा या केवल आलोचना नहीं होती।
- कहानी-संग्रह की समीक्षा में कथाओं का संक्षिप्त संदर्भ, पात्रों की विश्वसनीयता, भाषा, सामाजिक सरोकार और पठनीयता पर विचार किया जाता है। कहानी का पूरा कथानक सुनाने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 1: पुस्तक और समीक्षा की रूपरेखा उदाहरण के लिए प्रेमचंद के कहानी-संग्रह मानसरोवर को चुना गया है। पहले पुस्तक और लेखक का परिचय देंगे, फिर प्रतिनिधि कहानियों से उसके सरोकार स्पष्ट करेंगे। इसके बाद कथन-शैली की विशेषताओं और सीमाओं का उल्लेख करके उपयुक्त पाठक-वर्ग के लिए अपनी संस्तुति देंगे। संस्करण, मूल्य या पृष्ठ-संख्या ज्ञात न होने पर उनके बारे में कोई काल्पनिक तथ्य नहीं जोड़ा जाएगा।

चरण 2: संतुलित मूल्यांकन का आधार समीक्षा में ईदगाह और पूस की रात जैसे परिचित कथानकों को प्रमाण बनाया जा सकता है। हामिद का चिमटा खरीदना उसकी संवेदना और हल्कू की ठंडी रात ग्रामीण अभाव को सामने लाती है। सीमाओं के रूप में कुछ कहानियों की अपेक्षाकृत धीमी गति और स्पष्ट नैतिक संदेश का उल्लेख पाठकीय अनुभव के रूप में होगा, पूरे संग्रह पर निराधार आरोप की तरह नहीं।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पुस्तक-समीक्षा मानवीय संवेदना का संसार: मानसरोवर

समीक्षक: अमित कुमार

हाल ही में मैंने प्रेमचंद के कहानी-संग्रह मानसरोवर की कई कहानियाँ पढ़ीं। यह संग्रह भारतीय समाज, विशेषकर सामान्य मनुष्य के संघर्षों और उसकी संवेदनाओं से परिचित कराता है। इसमें ग्रामीण जीवन, गरीबी, सामाजिक विषमता और मानवीय संबंधों के विविध रूप दिखाई देते हैं।

ईदगाह में हामिद का अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदना बालमन की करुणा और त्याग को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करता है। पूस की रात में हल्कू की विवशता किसान के अभावग्रस्त जीवन को उभारती है। लेखक पात्रों को केवल उपदेश का माध्यम नहीं बनाते; उनकी इच्छाएँ, कमजोरियाँ और परिस्थितियाँ भी सामने लाते हैं। सहज भाषा, प्रसंगानुकूल संवाद और जीवन से जुड़े चित्र कहानियों को विश्वसनीय बनाते हैं।

फिर भी कुछ कहानियों की धीमी गति आज के पाठक को लंबी लग सकती है। कहीं स्पष्ट नैतिक संदेश पाठक को स्वयं निष्कर्ष निकालने का कम अवसर देता है। पुराने सामाजिक संदर्भ समझने के लिए भी ध्यानपूर्वक पढ़ना पड़ता है।

इन सीमाओं के बावजूद संग्रह की मानवीय दृष्टि अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। समाज को समझने और दूसरों के दुख के प्रति संवेदनशील बनने की इच्छा रखने वाले पाठकों के लिए यह उपयोगी तथा विचारोत्तेजक पुस्तक है।

चरण 4: निष्कर्ष समीक्षा में पुस्तक का परिचय, प्रतिनिधि कथाओं के प्रमाण, भाषा-शिल्प का मूल्यांकन, सीमाएँ और अंतिम संस्तुति दी गई है। इस प्रकार गुण-दोष दोनों पर विचार करते हुए संतुलित निर्णय प्रस्तुत होता है।

त्वरित सुझाव: समीक्षा लिखते समय एक उदाहरण कथावस्तु से, एक भाषा से और एक सीमा से चुनें; अंतिम निर्णय इन्हीं प्रमाणों पर आधारित रखें।

---

7. दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखकर कुछ लोगों के द्वारा स्वच्छता अभियान के महत्त्व को कम आँकने और इसके प्रति अपनाए जा रहे उपेक्षा भरे व्यवहार पर चिंता व्यक्त कीजिए । (150 शब्दों में) [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखे जाने वाले पत्र में सार्वजनिक समस्या, उसके दुष्परिणाम तथा व्यावहारिक सुझाव स्पष्ट किए जाते हैं। भाषा शिष्ट, तथ्यपरक और संक्षिप्त रहती है।
- पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य और नाम का क्रम रखा जाता है। निर्धारित शब्द-सीमा का ध्यान रखते हुए चिंता और समाधान दोनों प्रस्तुत किए जाते हैं।

चरण 1: पत्र का प्रारूप और विषय-वस्तु तय करना यह व्यक्तिगत शिकायत का पत्र नहीं, सार्वजनिक जागरूकता का आग्रह है। इसलिए विषय में स्वच्छता अभियान के प्रति उपेक्षा का उल्लेख होगा। मुख्य भाग में अभियान को केवल सरकारी जिम्मेदारी मानने की भूल, कूड़ा फैलाने से स्वास्थ्य को होने वाली हानि और नागरिक सहभागिता के उपाय आएँगे। संपादक से इस समस्या को समाचार-पत्र में स्थान देने का अनुरोध किया जाएगा।

चरण 2: पूर्ण आदर्श पत्र 24, विकास नगर

नई दिल्ली

12 जुलाई, 2018

सेवा में,

संपादक महोदय,

दैनिक जागरण,

नई दिल्ली।

विषय: स्वच्छता अभियान के प्रति उपेक्षा पर चिंता।

महोदय,

आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं स्वच्छता अभियान के प्रति कुछ लोगों के उपेक्षापूर्ण व्यवहार की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। वे इस अभियान को केवल सरकारी प्रचार समझते हैं और सफाई की जिम्मेदारी नगर निगम पर डाल देते हैं। सार्वजनिक स्थानों पर कूड़ा फेंकना, नालियों में प्लास्टिक डालना और सफाईकर्मियों के प्रयासों की अनदेखी करना उनकी दिनचर्या बन गया है।

यह सोच चिंताजनक है। गंदगी से मच्छर पनपते हैं, बीमारियाँ फैलती हैं और पर्यावरण दूषित होता है। स्वच्छता हमारे स्वास्थ्य तथा सामूहिक सम्मान से जुड़ी है। केवल तस्वीरें खिंचवाने या नारे लगाने से अभियान सफल नहीं होगा।

प्रत्येक नागरिक को गीला और सूखा कचरा अलग रखना चाहिए। मोहल्लों में नियमित जागरूकता कार्यक्रम हों और कूड़ेदान उपलब्ध कराए जाएँ। विद्यालय तथा सामाजिक संस्थाएँ भी सहयोग करें। कृपया अपने पत्र में इस विषय पर संपादकीय प्रकाशित कर नागरिकों को उनकी जिम्मेदारी का बोध कराएँ।

धन्यवाद।

भवदीय,
अमित कुमार

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में स्वच्छता अभियान के प्रति उपेक्षा पर चिंता व्यक्त करते हुए उसके स्वास्थ्य-संबंधी दुष्परिणाम, नागरिक कर्तव्य और जागरूकता के उपाय स्पष्ट किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र लिखते समय समस्या बताने के बाद दो-तीन ठोस उपाय और समाचार-पत्र से अपेक्षित सहयोग अवश्य लिखें।

8. यशोधर बाबू ने अपने प्रेरणा-स्रोत किशन दा से किन जीवन-मूल्यों को प्राप्त किया ? वे मूल्य उनके लिए कितने उपयोगी रहे ? लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर बाबू की परंपरागत जीवन-दृष्टि और उनके परिवार की आधुनिक जीवन-शैली के बीच तनाव दिखाई देता है।
- किशन दा से मिले मूल्यों की उपयोगिता का विवेचन करते समय उनका नैतिक महत्त्व तथा बदलते पारिवारिक परिवेश में उनकी व्यावहारिक सीमा, दोनों स्पष्ट करने चाहिए।

चरण 1: मूल्यों और उनकी उपयोगिता का आधार किशन दा यशोधर बाबू के मार्गदर्शक थे। उनसे प्राप्त सादगी, आत्मनिर्भरता और सामुदायिक जुड़ाव उनके व्यक्तित्व के स्थायी आधार बने। किंतु किशन दा के अविवाहित जीवन के आदर्शों को अपने गृहस्थ जीवन में कठोरता से अपनाने पर परिवार के बदलते अनुभवों को समझना कठिन हुआ। इसलिए उत्तर में मूल्यों को व्यर्थ ठहराने के बजाय उनके विवेकपूर्ण प्रयोग की आवश्यकता समझानी चाहिए।

चरण 2: लगभग 150 शब्दों में आदर्श उत्तर यशोधर बाबू ने अपने प्रेरणा-स्रोत किशन दा से सादगी, ईमानदारी, आत्मनिर्भरता, अनुशासन और समाज के प्रति अपनत्व जैसे जीवन-मूल्य प्राप्त किए। किशन दा ने उन्हें कामकाजी जीवन में सहारा दिया और जीवन जीने की दृष्टि भी दी। यशोधर बाबू ने उन्हीं की तरह दिखावे तथा अनावश्यक खर्च से दूर रहना, अपनी परंपराओं से जुड़े रहना और परिचितों के सुख-दुख में शामिल होना महत्त्वपूर्ण माना।
इन मूल्यों ने उन्हें कर्तव्यनिष्ठ और संयमी बनाया तथा कठिनाइयों में मानसिक आधार दिया। किंतु बदलते समय में वे किशन दा की जीवन-पद्धति को अंतिम आदर्श मान बैठे। पत्नी और बच्चों की आधुनिक रुचियाँ, सुविधाओं की इच्छा तथा उत्सव मनाने के तरीके उन्हें सहज स्वीकार नहीं हुए। इससे परिवार के भीतर दूरी बढ़ी। गृहस्थ जीवन की आवश्यकताएँ किशन दा के अकेले जीवन से भिन्न थीं। अतः ये मूल्य नैतिक दृष्टि से उपयोगी थे, पर उन्हें समयानुकूल समझ और पारिवारिक संवाद के साथ अपनाना आवश्यक था।

चरण 3: निष्कर्ष किशन दा के मूल्यों ने यशोधर बाबू को नैतिक दृढ़ता दी; उनकी कठिनाई उन मूल्यों की सार्थकता में नहीं, बदलते पारिवारिक जीवन के साथ उनका लचीला समन्वय करने में थी।

त्वरित सुझाव: पहले किशन दा से मिले मूल्यों के उदाहरण दें; फिर नैतिक लाभ और परिवार की नई अपेक्षाओं से उत्पन्न कठिनाई समझाकर संतुलित निष्कर्ष लिखें।

9(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30-40 शब्दों में दीजिए : 'बात सीधी थी' कविता में भाषा को सहूलियत से बरतने से कवि का क्या अभिप्राय है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा भावों को पाठक तक पहुँचाने का साधन है; उसकी सफलता सहजता और संप्रेषणीयता में है।
- भाव के अनुरूप शब्दों का चयन आवश्यक है; अनावश्यक शब्दाडंबर अर्थ को उलझा देता है।

चरण 1: अभिप्राय समझिए कुँवर नारायण की कविता में कवि एक सीधी बात को प्रभावशाली बनाने के प्रयास में भाषा के चक्कर में फँसा देता है। बात को सहज ढंग से कहने के स्थान पर वह शब्दों को बदलता और उलटता-पलटता है। फलतः बात अधिक स्पष्ट होने के बदले उलझ जाती है। यह प्रसंग बताता है कि कथन के मूल आशय की रक्षा करना भाषा के बाहरी प्रदर्शन से अधिक आवश्यक है।

चरण 2: सहूलियत का अर्थ पहचानिए भाषा को सहूलियत से बरतना उसे मनमाने ढंग से तोड़ना-मरोड़ना नहीं है। इसका अर्थ है कि कवि अपनी अनुभूति और बात की प्रकृति के अनुरूप सहज, उपयुक्त और सुबोध शब्द चुने। कविता में भाषा पर अनावश्यक बल लगाने से बात का बिगड़ना इसी असहज व्यवहार का परिणाम है। सरल बात को कठिन बनाना साहित्यिक श्रेष्ठता का प्रमाण नहीं है। कविता में बात की चूड़ी और भाषा की पेच जैसी अभिव्यक्तियाँ इसी संकट को मूर्त करती हैं। शब्दों पर अधिक दबाव देने से आशय की पकड़ ढीली पड़ती है। अतः शब्द-साधना का उद्देश्य कथ्य को सहज ढंग से सँभालना होना चाहिए, उसे बनावटी चमत्कार में खो देना नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष भाषा को सहूलियत से बरतने का अभिप्राय भावानुकूल, सहज और सरल भाषा अपनाना है। कवि चाहता है कि शब्दों का अनावश्यक आडंबर बात को उलझाए नहीं, बल्कि मूल आशय को स्पष्ट रूप से पाठक तक पहुँचाए।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सहजता और भावानुकूलता दोनों लिखिए; सहूलियत को भाषा के साथ मनमानी करने का अधिकार न बताइए।

9(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30-40 शब्दों में दीजिए : अट्टालिकाओं को आतंक का पर्याय कहने के पीछे कवि 'निराला' का क्या भाव है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अट्टालिकाएँ धनवान और शोषक वर्ग के वैभव की प्रतीक हैं।
- बादल की गर्जना क्रांति की चेतावनी बनती है; उसके प्रति संपन्न और वंचित वर्गों की प्रतिक्रिया भिन्न है।

चरण 1: अट्टालिकाओं का प्रतीकार्थ निराला की कविता में ऊँचे भवन मात्र स्थापत्य का वर्णन नहीं हैं। वे उस संपन्न वर्ग का संकेत करते हैं जिसके वैभव के साथ निर्धनों का शोषण और भय जुड़ा हुआ है। ऊँचाई तथा ऐश्वर्य के पीछे छिपी सामाजिक विषमता को पहचानने पर अट्टालिकाओं को आतंक का पर्याय कहने का आशय स्पष्ट होता है।

चरण 2: क्रांति के भय से संबंध बादल की गर्जना परिवर्तन का संकेत देती है। इससे शोषण पर टिका वैभव संकट में पड़ता है और संपन्न वर्ग घबरा जाता है। इसके विपरीत पीड़ित किसान बादल को जीवन देने वाली शक्ति मानकर बुलाता है। इस विरोध से कवि बताता है कि शोषक के लिए जो शक्ति भयकारी है, वही शोषित के लिए आशा और मुक्ति का संदेश है। कवि का दृष्टिकोण किसान और वंचित जन के पक्ष में है। अट्टालिकाओं के भीतर रहने वालों की चिंता अपनी संपत्ति बचाने की है, जबकि छोटे पौधे वर्षा से हर्षित होते हैं। यह तुलना सामाजिक परिवर्तन के प्रति दो वर्गों की अलग संवेदनाएँ सामने लाती है।

चरण 3: निष्कर्ष अट्टालिकाएँ शोषक पूँजीपतियों के वैभव की प्रतीक हैं। इनके निवासी गरीबों को शोषण से भयभीत रखते हैं और स्वयं क्रांति से डरते हैं। बादलों की गर्जना उनके वैभव के विनाश की चेतावनी है; इसलिए वे आतंक का पर्याय हैं।

त्वरित सुझाव: अट्टालिका का प्रतीक स्पष्ट करके उसे शोषण और क्रांति के भय से जोड़िए; केवल भवन की ऊँचाई का वर्णन पर्याप्त नहीं है।

9(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30-40 शब्दों में दीजिए : उमाशंकर जोशी की कविता में 'रस का अक्षय पात्र' किसे कहा गया है और क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कागज का पन्ना खेत और कविता की रचना खेती के रूपक से व्यक्त हुई है।
- साहित्य का रस पाठकों के बार-बार आस्वाद करने पर भी समाप्त नहीं होता।

चरण 1: रूपक का संदर्भ उमाशंकर जोशी कविता की रचना को खेती से जोड़ते हैं। कागज का पन्ना खेत है, जिसमें भावों के बीज कल्पना और अभिव्यक्ति के माध्यम से शब्दों की फसल बनते हैं। इस फसल का फल कविता का रस है। इसलिए प्रश्न का उत्तर किसी वास्तविक खेत या अन्न के पात्र से संबंधित नहीं है; वह काव्य और उसके आनंद की निरंतरता से संबंधित है।

चरण 2: अक्षय होने का कारण साधारण खेती की फसल कट जाने पर खेत में उसी रूप में नहीं बचती, परंतु कविता का रस पाठक के पढ़ने और अनुभव करने से घटता नहीं है। प्रत्येक पाठक उसे ग्रहण कर सकता है और वही पाठक दोबारा पढ़कर फिर आनंद पा सकता है। रचना में संचित अनुभूति अलग-अलग समय और पाठकों को तृप्त करती रहती है। इसीलिए उसका रस-भंडार अक्षय कहा गया है। इस रूपक में रचना का मूल्य केवल लिखे हुए पन्ने की भौतिक सीमा से नहीं आँका जा सकता। छोटा-सा कागज कल्पना और अनुभूति के सहारे व्यापक आनंद का स्रोत बन जाता है। रस का पात्र कहना इसी कलात्मक समृद्धि और पाठक तक बारंबार पहुँचने वाले आनंद को रेखांकित करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने कविता रूपी फसल को रस का अक्षय पात्र कहा है। इससे मिलने वाला काव्यानंद जितना बाँटा और ग्रहण किया जाता है, उतना ही बना रहता है। बार-बार आस्वादन करने पर भी उसका रस समाप्त नहीं होता।

त्वरित सुझाव: पहले कविता रूपी फसल की पहचान कीजिए, फिर सामान्य फसल और काव्यरस के समाप्त न होने का अंतर स्पष्ट कीजिए।

---

10. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों में लिखिए :

नील जल में या किसी की, गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो ।
और .....
जादू टूटता है
इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है । [6 अंक]

10(क). काव्यांश का बिंब स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बिंब शब्दों से निर्मित ऐसा चित्र है जिसे पाठक इंद्रियों के स्तर पर अनुभव करता है।
- नीला आकाश और उसमें उभरती उज्ज्वल आभा यहाँ रंग तथा गति का दृश्य उपस्थित करते हैं।

चरण 1: दृश्य की पहचान काव्यांश में नीला जल और उसमें हिलती हुई गौर, झिलमिल देह का चित्र है। इस तुलना के माध्यम से प्रभातकालीन नीले आकाश में फैलती उजली आभा को मूर्त बनाया गया है। झिलमिलाहट से प्रकाश की चमक और हिलने से दृश्य की गतिशीलता प्रकट होती है।

चरण 2: प्रकृति से संबंध कवि उषा के सौंदर्य को परिचित मानवीय दृश्य से जोड़ता है, जिससे रंग और चमक स्पष्ट दिखाई देने लगते हैं। सूर्योदय होते ही यह रहस्यमय सौंदर्य बदल जाता है और उषा का जादू टूटने की बात कही गई है। उत्तर का केंद्र इस रंगीन दृश्य का स्पष्टीकरण होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष नीले आकाश में झिलमिलाती उज्ज्वल आभा ऐसी दिखाई देती है, मानो नीले जल में किसी की गौर देह हिल रही हो। यह उषा के सौंदर्य का रंग और गति से युक्त चाक्षुष बिंब है।

त्वरित सुझाव: बिंब स्पष्ट करते समय नीले जल और गौर देह का प्रकृति से संबंध बताइए; केवल चाक्षुष बिंब नाम लिखना अधूरा होगा।

10(ख). प्रस्तुत काव्यांश के अलंकार सौंदर्य पर प्रकाश डालिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा में दो भिन्न वस्तुओं के समान गुण का स्पष्ट तुलना-सूचक शब्द से वर्णन होता है।
- यहाँ जैसे शब्द उषाकालीन दृश्य और जल में हिलती गौर देह के बीच समानता व्यक्त करता है।

चरण 1: अलंकार और आधार काव्यांश में प्रमुख रूप से उपमा अलंकार है। नीले आकाश में झिलमिलाती उज्ज्वल आभा का साम्य नीले जल में हिलती किसी की गौर देह से स्थापित हुआ है। जैसे शब्द इस तुलना को स्पष्ट करता है। दोनों दृश्यों की चमक और हलचल समानता का आधार हैं।

चरण 2: काव्य-सौंदर्य समझिए इस उपमा से उषा का सूक्ष्म और परिवर्तनशील सौंदर्य आँखों के सामने सजीव हो उठता है। नीले और गौर रंगों का मेल दृश्य को आकर्षक बनाता है। जादू टूटना अभिव्यक्ति उषा की मोहिनी आभा के समाप्त होने को प्रभावपूर्ण बनाती है; सूर्योदय के साथ दृश्य बदल जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में उपमा अलंकार है। नीले आकाश की उज्ज्वल आभा की तुलना नीले जल में हिलती गौर देह से हुई है। जैसे उपमावाचक शब्द है। इससे उषा का झिलमिलाता दृश्य सजीव और आकर्षक बनता है।

त्वरित सुझाव: अलंकार का नाम लिखने के साथ तुलना के दोनों पक्ष और जैसे शब्द दीजिए, ताकि पहचान का प्रमाण भी स्पष्ट हो।

10(ग). काव्यांश का भाव-सौन्दर्य लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उषाकालीन प्राकृतिक सौन्दर्य को मानवीय अनुभूति के रूप में समझना।
- उत्तर में काव्यांश के संकेतों को आधार बनाकर भाव स्पष्ट करना और अंतिम उत्तर को लगभग 30 शब्दों में रखना।

चरण 1: जल और देह का बिंब समझें नीले जल में झिलमिलाती गौर देह का बिंब उषा की निर्मल, कोमल और गतिशील छवि को सजीव बनाता है। जल की नीली पृष्ठभूमि और उजली देह का मेल रंगों के आकर्षक सामंजस्य का अनुभव कराता है।

चरण 2: जादू टूटने का आशय समझें उषा का सौन्दर्य सम्मोहक जादू की तरह मन को बाँधता है। सूर्योदय होते ही बदलते रंगों का यह क्षणिक रहस्य समाप्त होता है और प्रातःकाल का स्पष्ट प्रकाश फैलने लगता है। इस प्रकार कथन का आशय केवल बाहरी वर्णन तक सीमित नहीं है; उसके पीछे कवि की संवेदना और दृष्टि भी प्रकट होती है। उत्तर में इसी केंद्रीय भाव को संक्षेप में स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने उषा के निर्मल, कोमल और सम्मोहक सौन्दर्य को नीले जल में झिलमिलाती गौर देह से व्यक्त किया है। सूर्योदय के साथ यह क्षणिक सौन्दर्य-जादू समाप्त हो जाता है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौन्दर्य में उषा का आकर्षण और सूर्योदय से उसके बदलने का भाव लिखें।

11. निम्नलिखित काव्यांश में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक लगभग 30 शब्दों में दीजिए ।

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ ।
काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सोऊ ।।
तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ ।
माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबेको एकु न दैबको दोऊ ।। [8 अंक]

11(क). काव्यांश के आधार पर तुलसी के समय के समाज की दो विशेषताएँ बताइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश के सामाजिक संकेतों से समाज की विशेषताएँ पहचानना।
- उत्तर में काव्यांश के संकेतों को आधार बनाकर भाव स्पष्ट करना और अंतिम उत्तर को लगभग 30 शब्दों में रखना।

चरण 1: जातिगत भेदभाव का संकेत देखें राजपूत और जुलाहा जैसे जातिसूचक संबोधनों तथा जाति बिगड़ने की धारणा से समाज की ऊँच-नीच सामने आती है। व्यक्ति का मूल्यांकन उसके गुणों के स्थान पर जन्म और जाति के आधार पर किया जाता था।

चरण 2: विवाह और निंदा की प्रवृत्ति पहचानें बेटी-बेटे के विवाह से जाति बिगड़ने की बात बताती है कि वैवाहिक संबंध जातिगत सीमाओं में बँधे थे। धूत और अवधूत कहकर संबोधित करना स्वतंत्र विचार रखने वालों के प्रति उपहास और निंदा की प्रवृत्ति भी दिखाता है। इस प्रकार कथन का आशय केवल बाहरी वर्णन तक सीमित नहीं है; उसके पीछे कवि की संवेदना और दृष्टि भी प्रकट होती है। उत्तर में इसी केंद्रीय भाव को संक्षेप में स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसी के समय समाज में जातिगत ऊँच-नीच और छुआछूत की भावना प्रबल थी। विवाह-संबंध जाति के आधार पर बनते थे तथा स्वतंत्र विचार वाले लोगों की निंदा की जाती थी।

त्वरित सुझाव: दो विशेषताओं को अलग-अलग स्पष्ट करें और उनका आधार काव्यांश के शब्दों में खोजें।

11(ख). तुलसीदास को किस बात का कोई अंतर नहीं पड़ता और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रामभक्ति और लोकमत से स्वतंत्र व्यक्तित्व का संबंध समझना।
- उत्तर में काव्यांश के संकेतों को आधार बनाकर भाव स्पष्ट करना और अंतिम उत्तर को लगभग 30 शब्दों में रखना।

चरण 1: किन बातों की उपेक्षा है तुलसीदास को इस बात से अंतर नहीं पड़ता कि लोग उन्हें धूत, अवधूत, राजपूत या जुलाहा क्या कहते हैं। ये संबोधन समाज की निंदा, व्यंग्य और जातिगत पहचान थोपने की प्रवृत्ति के उदाहरण हैं।

चरण 2: उपेक्षा का कारण समझें वे स्वयं को राम का सेवक मानते हैं और उसी संबंध में संतुष्ट हैं। किसी के परिवार से विवाह-संबंध जोड़ने अथवा सामाजिक प्रतिष्ठा पाने की इच्छा नहीं है; इसलिए दूसरों की स्वीकृति उनके जीवन का आधार नहीं बनती। इस प्रकार कथन का आशय केवल बाहरी वर्णन तक सीमित नहीं है; उसके पीछे कवि की संवेदना और दृष्टि भी प्रकट होती है। उत्तर में इसी केंद्रीय भाव को संक्षेप में स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष लोग तुलसीदास को धूत, अवधूत, राजपूत या जुलाहा कुछ भी कहें, उन्हें अंतर नहीं पड़ता। वे राम के सेवक हैं और जातिगत प्रतिष्ठा अथवा सांसारिक संबंधों की अपेक्षा नहीं रखते।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले लोगों के संबोधन लिखें, फिर रामभक्ति से मिली निर्लिप्तता का कारण जोड़ें।

11(ग). तुलसी किस बात पर गर्व अनुभव करते हैं ? और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्त की वास्तविक पहचान और उसके आत्मगौरव का आधार समझना।
- उत्तर में काव्यांश के संकेतों को आधार बनाकर भाव स्पष्ट करना और अंतिम उत्तर को लगभग 30 शब्दों में रखना।

चरण 1: गर्व का विषय पहचानें तुलसी अपनी प्रसिद्ध पहचान राम के सेवक के रूप में बताते हैं। तुलसी सरनाम गुलामु है राम को में दास्य-भाव के साथ अडिग आत्मविश्वास है; वे जन्माधारित जाति या सांसारिक पद को अपना गौरव नहीं बनाते।

चरण 2: उस पहचान का महत्व समझें राम के प्रति समर्पण उनके जीवन को अर्थ, आश्रय और आत्मसंतोष देता है। यह आध्यात्मिक संबंध उन्हें लोकनिंदा तथा जातिगत हीनता-बोध से मुक्त रखता है, इसलिए दूसरों के कहने से उनकी प्रतिष्ठा कम नहीं होती। इस प्रकार कथन का आशय केवल बाहरी वर्णन तक सीमित नहीं है; उसके पीछे कवि की संवेदना और दृष्टि भी प्रकट होती है। उत्तर में इसी केंद्रीय भाव को संक्षेप में स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसी स्वयं को राम का सेवक होने पर गर्व करते हैं। रामभक्ति ही उनकी सच्ची पहचान और आत्मबल है; उसके सामने जातिगत प्रतिष्ठा तथा लोगों की निंदा महत्वहीन हैं।

त्वरित सुझाव: गर्व का आधार राम का सेवक होना है; उत्तर को जाति या धन की प्रतिष्ठा से न जोड़ें।

11(घ). कैसे कहा जा सकता है कि उक्त सवैये में तुलसी का स्वाभिमानी व्यक्तित्व झलकता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोकनिंदा से अप्रभावित और लोभमुक्त जीवन में स्वाभिमान पहचानना।
- उत्तर में काव्यांश के संकेतों को आधार बनाकर भाव स्पष्ट करना और अंतिम उत्तर को लगभग 30 शब्दों में रखना।

चरण 1: निंदा से अप्रभावित रहने का भाव देखें तुलसी लोगों को अपनी इच्छानुसार कुछ भी कहने देते हैं। उन्हें जातिगत मान्यता या सामाजिक प्रशंसा की याचना नहीं है। राम का सेवक होने की दृढ़ पहचान के कारण वे अपमानजनक संबोधनों से विचलित नहीं होते।

चरण 2: निर्लोभ जीवन का आधार देखें माँगकर भोजन करने और मस्जिद में सोने की बात न्यूनतम आवश्यकताओं में संतोष का संकेत है। लेने-देने के सांसारिक बंधनों से दूरी रखकर वे किसी के दबाव या कृपा पर आश्रित प्रतिष्ठा स्वीकार नहीं करते। इस प्रकार कथन का आशय केवल बाहरी वर्णन तक सीमित नहीं है; उसके पीछे कवि की संवेदना और दृष्टि भी प्रकट होती है। उत्तर में इसी केंद्रीय भाव को संक्षेप में स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसी लोकनिंदा से अप्रभावित रहकर रामदास होने की पहचान पर अडिग हैं। वे साधारण जीवन में संतुष्ट और सांसारिक लेन-देन से निर्लिप्त हैं; यही उनका स्वाभिमान दिखाता है।

त्वरित सुझाव: स्वाभिमान सिद्ध करने के लिए निंदा की उपेक्षा और निर्लोभ जीवन, दोनों के प्रमाण दें।

अथवा

11(क). कवि स्वयं को संसार से अलग क्यों मानता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संसार की भौतिक दृष्टि और कवि की भावनात्मक दृष्टि का अंतर पहचानना।
- प्रश्न के केंद्रीय भाव को स्पष्ट करते हुए अंतिम उत्तर लगभग 30 शब्दों में देना।

चरण 1: संसार की प्राथमिकता समझें संसार धन, संपत्ति और बाहरी प्रतिष्ठा को महत्त्व देता है। मनुष्य उसी पृथ्वी पर अपना वैभव संचित करने में लगा है। कवि को यह अपूर्ण संसार आकर्षित नहीं करता; इसलिए वह प्रचलित सामाजिक मूल्यों को अपने जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं बनाता।

चरण 2: कवि की स्वतंत्र जीवन-दृष्टि स्पष्ट करें कवि प्रेम, संवेदना और अपने अंतर्मन की अनुभूतियों को मूल्यवान मानता है। उसकी कल्पना अपने स्वप्नों का संसार बनाती है और उसे बदलती रहती है। वह दूसरों को प्रसन्न करने के लिए उनकी बात नहीं दोहराता, बल्कि अपने मन की अनुभूति व्यक्त करता है। इसी भिन्न मूल्य-दृष्टि के कारण वह स्वयं और संसार के बीच दूरी अनुभव करता है।

चरण 3: निष्कर्ष संसार धन और वैभव जुटाता है, जबकि कवि प्रेम, संवेदना तथा अपने स्वप्नों को महत्त्व देता है। दोनों की जीवन-दृष्टि भिन्न होने से वह स्वयं को संसार से अलग मानता है।

त्वरित सुझाव: कवि और संसार का अंतर बताते समय दोनों के जीवन-मूल्य साथ लिखें।

11(ख). कवि ने खंडहर का भाग किसे कहा है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खंडहर के लाक्षणिक अर्थ और आंतरिक समृद्धि का संबंध समझना।
- प्रश्न के केंद्रीय भाव को स्पष्ट करते हुए अंतिम उत्तर लगभग 30 शब्दों में देना।

चरण 1: खंडहर का आशय पहचानें खंडहर बाहरी भवन का वर्णन मात्र नहीं है। कवि इसके माध्यम से अपने दुखों से आहत जीवन और टूटे हुए हृदय का संकेत करता है। उसके अनुभवों में वेदना और अपूर्णता है; इसलिए वह अपने जीवन की तुलना खंडहर के अंश से करता है।

चरण 2: कवि की संपदा का मूल्य समझें उस आहत जीवन में प्रेम, संवेदना और अनुभूति का ऐसा धन है जिसका मूल्य बाहरी सुख-साधनों से अधिक है। राजाओं के भव्य महल भी उसके सामने न्योछावर होने योग्य बताए गए हैं। इस तुलना से कवि अपनी आंतरिक भाव-संपदा का गौरव प्रकट करता है; वह केवल अपने दुख की हीनता नहीं बता रहा है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने अपने दुखों से आहत जीवन और भग्न हृदय को खंडहर का भाग कहा है। उसमें प्रेम और संवेदनाओं की ऐसी संपदा है जिसके सामने राजमहलों का वैभव भी तुच्छ है।

त्वरित सुझाव: खंडहर का प्रतीक समझाते समय दुख के साथ भावनात्मक संपदा का मूल्य भी जोड़ें।

11(ग). रोदन में राग लिए फिरने से कवि का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तिगत वेदना के गीत में रूपांतरण का काव्यगत आशय समझना।
- प्रश्न के केंद्रीय भाव को स्पष्ट करते हुए अंतिम उत्तर लगभग 30 शब्दों में देना।

चरण 1: रोदन का अर्थ स्पष्ट करें रोदन कवि के निजी दुख और हृदय की पीड़ा की अभिव्यक्ति है। उसकी कविता भीतर की वेदना से उत्पन्न होती है। वह अपने अनुभवों को छिपाकर केवल बाहरी मनोरंजन के लिए गीत नहीं रचता, बल्कि मन की सच्ची अनुभूति को स्वर देता है।

चरण 2: राग के साथ संबंध समझें यह पीड़ा प्रेम, मधुरता और संगीत से रहित नहीं है। कवि अपने दुख को ऐसे भावपूर्ण गीत में ढाल देता है जिसे सुनकर दूसरों को भी रस मिलता है। उसके लिए जो व्यथा की अभिव्यक्ति है, श्रोताओं को वही मधुर गान लगती है। इस प्रकार करुणा और प्रेम उसके काव्य में एक साथ उपस्थित रहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कवि अपने व्यक्तिगत दुख को प्रेम और संगीत से भरे गीतों में व्यक्त करता है। उसके हृदय की पीड़ा दूसरों को मधुर गान लगती है; यही रोदन में राग होने का आशय है।

त्वरित सुझाव: रोदन को निजी पीड़ा और राग को उस पीड़ा की मधुर, प्रेमपूर्ण अभिव्यक्ति से जोड़ें।

11(घ). कवि-कर्म के प्रति व्यक्त दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य को अंतर्मन की स्वाभाविक अभिव्यक्ति मानने की दृष्टि पहचानना।
- प्रश्न के केंद्रीय भाव को स्पष्ट करते हुए अंतिम उत्तर लगभग 30 शब्दों में देना।

चरण 1: कविता की प्रेरणा पहचानें कवि के लिए काव्य-रचना भीतर उमड़ती अनुभूतियों की सहज अभिव्यक्ति है। उसकी पीड़ा जब शब्दों में फूटती है तो लोग उसे कविता समझते हैं। इससे पता चलता है कि कवि-कर्म उसके लिए केवल छंद बनाने का अभ्यास अथवा दूसरों की प्रशंसा पाने का साधन नहीं है।

चरण 2: कवि और श्रोता की दृष्टि का अंतर समझें श्रोता रचना की मधुरता और कलात्मक रूप से प्रभावित होते हैं, जबकि कवि उसे अपने हृदय के रोने और भावों के उमड़ने के रूप में अनुभव करता है। वह अपनी सच्ची अनुभूति को प्रधान मानता है। इस दृष्टि में कविता का आधार संवेदना की प्रामाणिकता है; उसका कलात्मक रूप इसी भीतरी आवेग की अभिव्यक्ति बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि-कर्म हृदय की सच्ची अनुभूतियों और वेदना की सहज अभिव्यक्ति है। कवि जिसे अपना रोना मानता है, संसार उसे गीत और छंद कहता है; कविता उसके अंतर्मन से स्वतः फूटती है।

त्वरित सुझाव: कवि-कर्म का आशय बताते समय सहज अनुभूति और श्रोताओं की कलात्मक दृष्टि का संबंध स्पष्ट करें।

12. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक लगभग 30 शब्दों में दीजिए :

हम आज देश के लिए क्या करते हैं ? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है । अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है । हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर, अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं ? काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी-की-फूटी रह जाती है, बैल पियासे-के-पियासे रह जाते हैं ? आखिर कब बदलेगी यह स्थिति ? [8 अंक]

12(क). भ्रष्टाचार की चर्चा करते हुए लेखक क्या अपेक्षा करता है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश का केंद्रीय आग्रह दूसरों की निंदा करने के साथ अपने आचरण की जाँच करना है।
- स्वार्थ और त्याग के अभाव के कारण सामाजिक सुधार केवल चर्चा तक सीमित रह जाता है।

चरण 1: लेखक की अपेक्षा पहचानें लेखक पूछता है कि क्या हमने अपने स्तर पर जाँचा है कि हम भी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे। यह प्रश्न आत्मपरीक्षण की अपेक्षा व्यक्त करता है। दूसरों के भ्रष्टाचार की बातें चटखारे लेकर करना पर्याप्त नहीं है।

चरण 2: अपेक्षा का कारण समझें व्यक्ति केवल दूसरों को दोष देता रहे और अपने व्यवहार में वही बुराइयाँ बनाए रखे, तो समाज नहीं बदल सकता। इसलिए ईमानदार आत्मसुधार सामाजिक सुधार की आवश्यक शुरुआत है। उत्तर में अपेक्षा और उसका कारण दोनों देना चाहिए। इससे व्यक्ति की अपनी जिम्मेदारी भी स्पष्ट होती है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक अपेक्षा करता है कि हम दूसरों के भ्रष्टाचार की चर्चा के साथ अपने आचरण को भी जाँचें, क्योंकि स्वयं भ्रष्ट व्यवस्था का अंग बने रहकर समाज का सुधार नहीं किया जा सकता।

त्वरित सुझाव: उत्तर में आत्मपरीक्षण की अपेक्षा को स्पष्ट करके उसे सामाजिक सुधार की आवश्यकता से जोड़ें।

12(ख). 'बैल पियासे-के-पियासे रह जाते हैं' कथन से लेखक का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में वर्षा के बाद भी प्यासे बैल संसाधन होने पर भी वंचित लोगों की स्थिति का संकेत हैं।
- कथन का आशय प्रसंग के अनुसार समझना चाहिए; यहाँ केवल मौसम या पशुओं की वास्तविक प्यास विषय नहीं है।

चरण 1: प्रसंग से प्रतीक का अर्थ निकालें लेखक बड़ी माँगों, स्वार्थ और भ्रष्टाचार का उल्लेख करके बरसते मेघों तथा प्यासे बैलों का चित्र प्रस्तुत करता है। पर्याप्त वर्षा होने पर भी प्यास न बुझना बताता है कि उपलब्ध साधनों का अपेक्षित उपयोग नहीं हो रहा।

चरण 2: सामाजिक आशय स्पष्ट करें संसाधन और सहायता उपलब्ध होने पर भी भ्रष्टाचार तथा स्वार्थ के कारण उनका लाभ जरूरतमंदों तक नहीं पहुँचता। अभावग्रस्त लोगों की मूल आवश्यकताएँ अधूरी रहती हैं। इसी विडंबना को लेखक ने प्यासे बैलों के माध्यम से उभारा है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन का आशय है कि साधन और सहायता उपलब्ध होने पर भी स्वार्थ तथा भ्रष्टाचार के कारण जरूरतमंदों को उनका लाभ नहीं मिलता और उनकी मूल आवश्यकताएँ अधूरी रह जाती हैं।

त्वरित सुझाव: प्यासे बैलों को वंचित लोगों और वर्षा को उपलब्ध साधनों से जोड़कर कथन का सामाजिक आशय लिखें।

12(ग). आपके विचार से यह स्थिति कब और कैसे बदलेगी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तिगत राय को गद्यांश में उठाई गई समस्याओं के समाधान से जोड़ना चाहिए।
- आत्मपरीक्षण, ईमानदारी, त्याग और सामूहिक जिम्मेदारी स्वार्थ तथा भ्रष्टाचार का प्रतिकार करते हैं।

चरण 1: परिवर्तन की शर्त पहचानें स्थिति तब बदलेगी जब लोग केवल दूसरों की आलोचना और अपनी माँगों तक सीमित नहीं रहेंगे। उन्हें अपने व्यवहार में भ्रष्टाचार की भागीदारी पहचानकर उसे छोड़ना होगा और देश के प्रति अपने दायित्व निभाने होंगे।

चरण 2: व्यावहारिक उपाय प्रस्तुत करें ईमानदारी से काम करना, निजी स्वार्थ से ऊपर उठना और सार्वजनिक साधनों का उचित उपयोग सुनिश्चित करना जरूरी है। सहायता वास्तविक जरूरतमंदों तक पहुँचे और नागरिक मिलकर जिम्मेदारी निभाएँ, तभी गद्यांश में व्यक्त विडंबना दूर होगी।

चरण 3: निष्कर्ष यह स्थिति तब बदलेगी जब हम आत्मपरीक्षण करके भ्रष्ट आचरण छोड़ेंगे, स्वार्थ से ऊपर उठकर त्याग और ईमानदारी अपनाएँगे तथा सार्वजनिक संसाधनों का लाभ जरूरतमंदों तक पहुँचाने की जिम्मेदारी निभाएँगे।

त्वरित सुझाव: अपनी राय को गद्यांश की समस्याओं से जोड़ें और केवल आदर्श बताने के बजाय ठोस आचरण सुझाएँ।

12(घ). लेखक के अनुसार आज हमारे समाज में कैसी प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में समाज की प्रवृत्ति पहचानने के लिए लेखक के कथनों और आत्मनिरीक्षण संबंधी प्रश्न को आधार बनाना चाहिए।
- समाज में अधिकारों की माँग और निजी स्वार्थ बढ़ रहे हैं, जबकि देश के लिए त्याग तथा अपने आचरण की जाँच उपेक्षित हैं।

चरण 1: पाठ के संकेत पहचानना लेखक कहता है कि माँगें बड़ी हैं, पर त्याग नहीं है और अपना स्वार्थ ही लक्ष्य बन गया है। लोग दूसरों के भ्रष्टाचार की चर्चा तो करते हैं, लेकिन अपने व्यवहार को नहीं परखते। इससे स्वार्थपरता तथा आत्मनिरीक्षण के अभाव का पता चलता है। लेखक चाहता है कि व्यक्ति देश के प्रति अपना दायित्व भी समझे।

चरण 2: लगभग 30 शब्दों में उत्तर आज समाज में स्वार्थपरता, त्याग का अभाव और केवल माँग करने की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है। लोग दूसरों के भ्रष्टाचार की चर्चा करते हैं, पर अपने आचरण का आत्मनिरीक्षण नहीं करते।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक समाज की स्वार्थपरता, त्यागहीनता और दूसरों को दोष देकर स्वयं की जाँच से बचने की प्रवृत्ति उजागर करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में माँग और त्याग का विरोध तथा दूसरों की आलोचना और अपने आत्मनिरीक्षण का अंतर स्पष्ट करें।

13(क). 'अतीत में दबे पाँव' के आधार पर सिद्ध कीजिए कि "हड़प्पा-कालीन संस्कृति कृषि प्रधान संस्कृति थी ।" लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी संस्कृति को कृषि प्रधान सिद्ध करने के लिए खेती, उत्पादन, भंडारण तथा उससे जुड़े जीवन के पुरातात्त्विक प्रमाणों को जोड़ना आवश्यक है।
- मोहनजोदड़ो के अवशेष, अनाज का भंडारण, खेती और पशुपालन के संकेत पाठ में हड़प्पा सभ्यता की आजीविका का आधार स्पष्ट

करते हैं।

चरण 1: प्रमाण और उत्तर की योजना आरंभ में हड़प्पा संस्कृति की समृद्धि का आधार कृषि बताएँ। फिर अनाज, भंडार, खेती से जुड़े पशुओं तथा सिंधु क्षेत्र की उपजाऊ भूमि के संदर्भ जोड़ें। अंत में स्पष्ट करें कि विकसित व्यापार और नगर जीवन भी कृषि के अधिशेष पर टिके थे। केवल नगरों की भव्यता का वर्णन करना पर्याप्त नहीं है; प्रत्येक प्रमाण को कृषि से जोड़ना चाहिए।

चरण 2: लगभग 150 शब्दों में उत्तर 'अतीत में दबे पाँव' में हड़प्पा सभ्यता के अवशेष बताते हैं कि उसकी समृद्धि का प्रमुख आधार कृषि था। सिंधु की उपजाऊ घाटी और जल की उपलब्धता ने खेती के अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान कीं। गेहूँ, जौ और कपास जैसी फसलों की खेती इस सभ्यता की कृषि संबंधी उन्नति का परिचय देती है। कपास का उत्पादन वस्त्र निर्माण और व्यापार का आधार भी बना।

मोहनजोदड़ो में मिले विशाल अन्न भंडार बताते हैं कि अनाज का उत्पादन केवल तत्काल उपभोग तक सीमित नहीं था; उसके संग्रह और वितरण की व्यवस्था भी थी। पशुपालन, बैलों का महत्त्व तथा बैलगाड़ियों के संकेत कृषि से जुड़े जीवन की पुष्टि करते हैं। नगरों के कारीगरों और व्यापारियों की आवश्यकताओं की पूर्ति भी कृषि उत्पादन से होती थी। इस प्रकार यहाँ नगर नियोजन, शिल्प और व्यापार विकसित होने पर भी आजीविका तथा आर्थिक समृद्धि की जड़ें खेती में थीं। इसलिए हड़प्पा-कालीन संस्कृति को कृषि प्रधान कहना उचित है।

चरण 3: निष्कर्ष अन्न उत्पादन, भंडारण, पशुपालन और कृषि पर निर्भर नगर अर्थव्यवस्था मिलकर हड़प्पा संस्कृति के कृषि प्रधान स्वरूप की पुष्टि करते हैं।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक पुरातात्त्विक प्रमाण के बाद बताइए कि वह खेती, कृषि उत्पादन या उसके भंडारण से कैसे जुड़ता है।

13(ख). "प्रतिकूलता में अनुकूलन करने की क्षमता है ।" 'जूझ' पाठ में उल्लिखित इस बात से आप कहाँ तक सहमत हैं और क्यों ? लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतिकूल परिस्थितियों में अनुकूलन का अर्थ कठिनाइयों के बीच लक्ष्य प्राप्ति के लिए समय, साधन और व्यवहार का उपयोग करना है।
- आनंदा का शिक्षा के प्रति लगाव, खेती के साथ पढ़ाई का समायोजन और कविता के प्रति रुचि इस क्षमता के प्रमाण हैं।

चरण 1: कथन का आशय और प्रसंग कथन से सहमति को आनंदा के संघर्ष से पुष्ट करना है। पिता का विरोध और खेत का श्रम उसकी कठिनाइयाँ हैं। दत्ता जी राव का हस्तक्षेप पढ़ने का अवसर दिलाता है, किंतु उस अवसर का लाभ आनंदा की अपनी लगन से मिलता है। इसलिए उत्तर में दूसरों के सहयोग के साथ उसकी सक्रिय मेहनत भी स्पष्ट होनी चाहिए। अनुकूलन लक्ष्य छोड़ना नहीं, बल्कि उपलब्ध परिस्थितियों में उसके लिए व्यावहारिक उपाय खोजना है।

चरण 2: लगभग 150 शब्दों में उत्तर मैं इस कथन से सहमत हूँ। 'जूझ' का आनंदा प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच अपनी राह बनाने की क्षमता दिखाता है। उसके पिता उसे पढ़ाने के स्थान पर खेती में लगाना चाहते हैं। घरेलू वातावरण और कठोर श्रम उसकी शिक्षा के मार्ग में बाधा बनते हैं। फिर भी वह पढ़ने की इच्छा नहीं छोड़ता। दत्ता जी राव के हस्तक्षेप से विद्यालय जाने की अनुमति मिलने पर वह खेती का काम करने की शर्त स्वीकार करता है।

आनंदा खेत और विद्यालय के काम में तालमेल बैठाता है। पढ़ाई में पीछे रह जाने पर निराश होने के बजाय परिश्रम से अपनी स्थिति सुधारता है। सौंदलगेकर अध्यापक के कविता पाठ से प्रेरित होकर वह खेतों में काम करते समय भी कविताएँ गुनगुनाता और अपनी रचना का अभ्यास करता है। इस प्रकार जिस श्रम ने उसकी पढ़ाई रोकी थी, उसी के बीच वह अभ्यास का अवसर निकालता है। उसका संघर्ष सिद्ध करता है कि लगन, सहयोग और समय के सदुपयोग से कठिन परिस्थितियों में भी विकास संभव है।

चरण 3: निष्कर्ष आनंदा परिस्थितियों के आगे हारने के बजाय खेती, शिक्षा और सृजन के बीच रास्ता बनाता है; यही उसके अनुकूलन की क्षमता है।

त्वरित सुझाव: सहमति को केवल प्रेरक कथन से नहीं, पिता के विरोध, खेती की शर्त और कविता के अभ्यास के ठोस प्रसंगों से सिद्ध करें।

14(क). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30-40 शब्दों में दीजिए : पहलवान की ढोलक की आवाज पूरे गाँव के मरणासन्न लोगों की सहायता कैसे कर रही थी ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ढोलक की ध्वनि और जीवन के प्रति संघर्षशीलता।
- पाठ के प्रसंग से समर्थन लेकर प्रश्न के सभी पक्षों का उत्तर संक्षेप में देना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग का आशय महामारी से घिरे गाँव में भय, निराशा और मृत्यु का सन्नाटा था। ढोलक की आवाज इस वातावरण में जीवन की उपस्थिति का संकेत देती है।

चरण 2: उत्तर के प्रमुख बिंदु लुट्टन की ढोलक रोग की औषधि नहीं थी। उसकी लय लोगों के डरे हुए मन को सहारा देती थी और उन्हें विपत्ति के सामने हार न मानने की प्रेरणा देती थी। इसलिए सहायता का अर्थ मानसिक बल प्रदान करना है।

चरण 3: पाठ से संबंध और सावधानी कहानी में महामारी ने सामूहिक जीवन की चहल-पहल समाप्त कर दी थी। ऐसे समय में नियमित सुनाई पड़ने वाली ताल गाँव वालों का ध्यान मृत्यु की आशंका से हटाकर धैर्य की ओर ले जाती थी। लुट्टन का अपना जीवन भी संघर्ष से जुड़ा है; इसलिए उसकी ढोलक विपत्ति में टिके रहने की प्रेरणा बनती है। उत्तर में किसी शारीरिक रोग के ठीक हो जाने का दावा नहीं करना चाहिए, क्योंकि प्रश्न ध्वनि के मनोवैज्ञानिक प्रभाव के विषय में है।

चरण 4: 30-40 शब्दों में उत्तर पहलवान की ढोलक की आवाज मरणासन्न लोगों के भय और निराशा को कम करती थी। उसकी ताल उन्हें जीवित होने का अहसास, सांत्वना और आवश्यक मानसिक शक्ति देती थी तथा मृत्यु से संघर्ष करने का साहस जगाती थी।

चरण 5: निष्कर्ष ढोलक की ताल भय और निराशा घटाकर मरणासन्न गाँव वालों को मानसिक संबल तथा जीवन-संघर्ष का साहस देती थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में ढोलक को औषधि न बताएँ; भय घटने और संघर्ष का साहस मिलने पर ध्यान दें।

14(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30-40 शब्दों में दीजिए : भक्तिन अपना नाम क्यों बदलना चाहती थी ? लेखिका ने इस सन्दर्भ में क्या कहा है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाम के अर्थ और वास्तविक जीवन की विडंबना।
- पाठ के प्रसंग से समर्थन लेकर प्रश्न के सभी पक्षों का उत्तर संक्षेप में देना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग का आशय भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन अर्थात लक्ष्मी था। लक्ष्मी समृद्धि का प्रतीक हैं, जबकि भक्तिन का जीवन अभावों और संघर्षों से भरा था। इसी विरोध के कारण उसे अपना नाम पसंद नहीं था।

चरण 2: उत्तर के प्रमुख बिंदु लेखिका नाम और उसके धारक के गुण अथवा परिस्थिति के बीच अनिवार्य संबंध नहीं मानतीं। उन्होंने नाम की अनुकूलता और प्रतिकूलता को लेकर उसका उपहास करने के स्थान पर उसे भक्तिन नाम दिया। उत्तर में दोनों पक्ष आने चाहिए।

चरण 3: पाठ से संबंध और सावधानी प्रश्न के पहले भाग में नाम बदलने का कारण और दूसरे भाग में लेखिका की टिप्पणी पूछी गई है। केवल नया नाम लिख देने से उत्तर अधूरा रहेगा। लछमिन नाम के साथ धन और सौभाग्य का अर्थ जुड़ा था; उसकी आर्थिक स्थिति उस अर्थ से मेल नहीं खाती थी। लेखिका की दृष्टि व्यक्ति को नाम के आधार पर परखने की अपेक्षा उसके वास्तविक जीवन को समझने की है। भक्तिन नाम उसके सेवाभावी व्यक्तित्व के अनुरूप संबोधन बन जाता है।

चरण 4: 30-40 शब्दों में उत्तर भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन था। लक्ष्मी नाम होते हुए भी वह निर्धन थी, इसलिए नाम छिपाना चाहती थी। लेखिका ने माना कि नाम और जीवन में संगति अनिवार्य नहीं होती; उन्होंने उसे भक्तिन नाम दिया।

चरण 5: निष्कर्ष लछमिन नाम और निर्धन जीवन की विसंगति से भक्तिन नाम छिपाना चाहती थी; लेखिका नाम और वास्तविक जीवन

में संगति अनिवार्य नहीं मानती थीं।

त्वरित सुझाव: पहले लछमिन नाम और निर्धनता का विरोध लिखें, फिर नाम के विषय में लेखिका की दृष्टि जोड़ें।

14(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30-40 शब्दों में दीजिए : आप बाजार जाते समय उसके जादू से बचने के लिए क्या उपाय करेंगे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आवश्यकता की स्पष्टता और विवेकपूर्ण खरीदारी।
- पाठ के प्रसंग से समर्थन लेकर प्रश्न के सभी पक्षों का उत्तर संक्षेप में देना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग का आशय बाज़ार का आकर्षण सजावट और वस्तुओं की चमक से अनावश्यक इच्छाएँ पैदा करता है। खाली मन और अस्पष्ट आवश्यकता वाला ग्राहक इसके प्रभाव में अधिक आसानी से आता है।

चरण 2: उत्तर के प्रमुख बिंदु बाज़ार जाने से पहले वास्तविक आवश्यकताओं की सूची और खर्च की सीमा निश्चित करनी चाहिए। किसी वस्तु की चमक के बदले उसकी उपयोगिता पर विचार करना चाहिए। दूसरों को देखकर खरीदना और केवल सस्ते होने पर चीजें लेना इस सावधानी के विरुद्ध है।

चरण 3: पाठ से संबंध और सावधानी पाठ का संदेश बाज़ार जाने या हर वस्तु खरीदने का निषेध नहीं है। विवेकपूर्ण ग्राहक अपनी जरूरत जानता है और उसी के अनुसार वस्तु चुनता है। भरी हुई जेब भी संयम का विकल्प नहीं बनती; पैसा होने का अर्थ हर आकर्षक वस्तु खरीद लेना नहीं है। आवश्यकता स्पष्ट रहने पर बाज़ार उपयोगी वस्तुओं का स्थान रहता है और मनुष्य दिखावे की प्रतियोगिता से बचता है। इसीलिए उत्तर में केवल पैसे कम ले जाने के स्थान पर मन की स्पष्टता को प्रमुख रखना चाहिए।

चरण 4: 30-40 शब्दों में उत्तर बाज़ार के जादू से बचने के लिए मैं अपनी आवश्यकताओं की सूची और बजट बनाकर जाऊँगा। आकर्षक सजावट, विज्ञापन और दिखावे से प्रभावित हुए बिना केवल उपयोगी वस्तुएँ खरीदूँगा तथा अनावश्यक खरीदारी से बचूँगा।

चरण 5: निष्कर्ष आवश्यकताओं की स्पष्टता, निश्चित बजट और संयम मुझे बाज़ार के आकर्षण में अनावश्यक वस्तुएँ खरीदने से बचाएँगे।

त्वरित सुझाव: इस व्यक्तिगत प्रश्न में मैं के रूप में उत्तर दें और आवश्यकता, बजट तथा संयम तीनों जोड़ें।

14(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30-40 शब्दों में दीजिए : 'लाहौर अभी तक मेरा वतन है ।' इस कथन से व्यक्त वेदना पर अपने विचार व्यक्त कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विभाजन के बाद भी जन्मभूमि से आत्मीय संबंध।
- पाठ के प्रसंग से समर्थन लेकर प्रश्न के सभी पक्षों का उत्तर संक्षेप में देना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग का आशय कथन में राजनीतिक सीमा और मनुष्य के भावनात्मक लगाव का अंतर उभरता है। विभाजन के बाद निवास बदल सकता है, लेकिन बचपन, परिचित जीवन और जन्मभूमि की स्मृतियाँ सहज नहीं मिटतीं।

चरण 2: उत्तर के प्रमुख बिंदु लाहौर को अब भी अपना वतन कहना विस्थापन की पीड़ा व्यक्त करता है। यह किसी प्रशासनिक दावे का वक्तव्य नहीं, अपनी धरती से बिछुड़ने की कसक है। कथन मानवीय आत्मीयता को देशों की सीमाओं से अधिक स्थायी दिखाता है।

चरण 3: पाठ से संबंध और सावधानी विभाजन ने अनेक लोगों को अपने परिचित सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश से दूर कर दिया। नए स्थान में बस जाने के बाद भी पुरानी गलियाँ, रिश्ते और साझा जीवन की यादें उनके लिए आत्मीय बनी रहीं। इसलिए अभी तक शब्द

विशेष अर्थ रखते हैं: बीता हुआ समय भी उस लगाव को समाप्त नहीं कर पाया है। कथन में किसी समुदाय के प्रति घृणा नहीं, बल्कि बिछुड़ने की मानवीय पीड़ा और अपनेपन की निरंतरता को पहचानना चाहिए।

चरण 4: 30-40 शब्दों में उत्तर इस कथन में विभाजन से बिछुड़ी जन्मभूमि की गहरी वेदना है। सीमाएँ बदलने पर भी लाहौर की स्मृतियाँ और अपनापन जीवित हैं। यह विस्थापन की पीड़ा तथा राजनीतिक बँटवारे से परे मानवीय लगाव की अभिव्यक्ति है।

चरण 5: निष्कर्ष विभाजन के बाद भी लाहौर से आत्मीय लगाव बना रहना जन्मभूमि से बिछुड़ने की वेदना और स्मृतियों की स्थायी शक्ति व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: वतन को केवल वर्तमान निवास न समझें; स्मृति, अपनापन और विस्थापन की पीड़ा से कथन जोड़ें।

14(ङ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30-40 शब्दों में दीजिए : शिरीष की तुलना किससे की गई है और क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंध में शिरीष प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जीवन की सरसता बनाए रखने का प्रतीक है। उसकी कोमलता के साथ उसकी कठिन परिस्थितियों को सहने की क्षमता को समझना आवश्यक है।
- अवधूत वह मस्त और अनासक्त साधक है जो सांसारिक सुख-दुख से विचलित हुए बिना अपने स्वभाव में स्थित रहता है। शिरीष की तुलना इसी गुण के आधार पर की गई है।

चरण 1: तुलना का आधार पहचानना शिरीष भीषण गर्मी, लू और वातावरण की कठोरता के बीच भी खिलता रहता है। बाहर की प्रतिकूलता उसकी सहज प्रसन्नता और फूलों की कोमलता को नष्ट नहीं करती। लेखक इसी आचरण में अवधूत की मस्ती और अनासक्ति देखते हैं। यहाँ तुलना केवल वृक्ष और मनुष्य के बाहरी रूप की नहीं, उनके जीवन-स्वभाव की है।

चरण 2: अनासक्ति का आशय स्पष्ट करना अवधूत कठिनाइयों से घबराकर जीवन से विमुख नहीं होता; वह उनसे अप्रभावित रहकर सहज बना रहता है। उसी प्रकार शिरीष कठोर वातावरण में भी सरसता बाँटता है। इसलिए उत्तर में अवधूत का उल्लेख करने के साथ विपरीत परिस्थितियों में भी मस्त, अनासक्त और सरस बने रहने का कारण अवश्य देना चाहिए।

चरण 3: 30-40 शब्दों में उत्तर शिरीष की तुलना एक अवधूत से की गई है। जैसे अवधूत सुख-दुख से अप्रभावित रहकर मस्त और अनासक्त रहता है, वैसे ही शिरीष भीषण गर्मी और लू में भी अपने कोमल फूलों से सरसता बिखेरता रहता है।

चरण 4: निष्कर्ष शिरीष अवधूत की तरह प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अनासक्त, मस्त और सरस बना रहता है; इसी स्वभाव-साम्य के कारण लेखक ने यह तुलना की है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले 'अवधूत' लिखें और फिर उसकी अनासक्ति को शिरीष के गर्मी और लू में भी खिलते रहने से जोड़ें।